15
अध्याय

केन्द्रीय चिकित्सा संस्थान और नए एम्स

15-1 vf[ky Hkkjrh; vk;qfoZKku laLFkku ¼,El½] ubZ fnYyh

e[; fo'k"krk,¡

- भारत के प्रधानमंत्री द्वारा दिनांक 4 जुलाई, 2015 को डिजीटल इंडिया वीक के भाग के रूप में एम्स ई–हॉस्पिटल प्रोजेकट (ऑनलाइन पंजीकरण प्रणाली) का शुभारंभ।
- स्वास्थ्य मंत्री ने 15 जुलाई, 2015 को ''कायाकल्प–स्वच्छ व हरित एम्स'' अभियान का शुभारंभ।
- स्वास्थ्य मंत्री ने कैंसर रोगियों के लिए सस्ती दवाएं उपलब्ध कराने के लिए 15 नवम्बर, 2015 को अमृत फार्मेसी एंड ड्रग स्टोर की शुरूआत की।
- स्वास्थ्य मंत्री और हरियाणा के मुख्यमंत्री ने 12 दिसम्बर, 2015 को एम्स झज्जर परिसर में स्वतंत्र भारत की सबसे बडी स्वास्थ्य परिचर्या परियोजना ''राष्ट्रीय कैंसर संस्थान'' का भूमि पूजन समारोह आयोजित किया।
- स्वास्थ्य मंत्री और उर्जा, कोयला, नवीन एवं नवीकरणीय ऊर्जा राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार) द्वारा 25 दिसम्बर, 2015 को एम्स ओपीडी सुधार परियोजना की शुरूआत की।
- अगले 3–5 वर्षों में लगभग 3000 बिस्तरों की बढोतरी द्वारा एम्स की कुल बिस्तर क्षमता में प्रमुख विस्तार।
- राष्ट्रीय कैंसर संस्थान, झज्जर का कार्य 2035 करोड रू. की लागत से शुरू किया गया।
- 573 करोड रू. की लागत से एक नया ओपीडी ब्लॉक।
- 204.44 करोड रू. की लागत से एक नया मातृ एवं शिशु ब्लॉक।
- एक राष्ट्रीय वृद्धजन केन्द्र।
- एमडी/डीएम/एमसीएच के नए पाठ्यक्रम और सीनियर रेजीडेंट्स के पदों में 90 प्रतिशत तक (250 से अधिक) वृद्धि।

ifjp;

संसद के एक अधिनियम द्वारा 1965 में स्थापित अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान (एम्स), एक राष्ट्रीय महत्व का संस्थान तथा एक उत्कृष्टता का केन्द्र है। विगत 6 दशकों में एम्स ने नैदानिक प्रदाता, अनुसंधान संस्थान और शिक्षण संस्थान के रूप में अपनी भूमिकाओं को काफी सराहनीय तरीके से निभाया है। इसने नीति निरूपण में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। एम्स ने प्रतिभा और शिक्षा के उच्चतम मानकों को सदैव बनाए रखा है। इसने देशभर से सर्वश्रेष्ठ प्रतिभाओं को आकर्षित किया है जो इस संस्थान में एक युवा छात्र के रूप में प्रवेश लेते हैं और गरीब से गरीब व्यक्ति की सेवा करने की प्रतिबद्धता की प्रगाढता सहित उत्तीर्ण हो कर जाते हैं।

एम्स को स्वायत्तता के उच्च स्तरों सहित विकसित किया गया है। सरकार ने एम्स की शासन संरचना को सुनिश्चित और सुदृढ करने के प्रयास किए हैं। एम्स

के अधिनियमों, नियमों और विनियमों की विस्तृत समीक्षा शुरू की है। सरकार ने प्रस्तावित संशोधनों में वेंकटचलम समिति, वेलियाथन समिति, स्नेह भार्गव समिति, सुजाता राव समिति, और प्रधान समिति की सिफारिशों को शामिल करने पर विचार कर रही है। सरकार ने निर्णय लेने में संस्थान को अधिक वित्तीय और प्रशासनिक स्वायत्ता देने पर विचार किया है।

15-1-1 fpfdRlk f'k{kk

प्लास्टिक, बर्न्स एवं पुनर्निमाण सर्जरी, संविधवातीय शास्त्र तथा अर्बुद संज्ञाहरण विभागों का सृजन किया गया है ताकि इन उभरते क्षेत्रों में बढती मांग को पूरा किया जा सके। विधिवत चयन प्रक्रिया के पश्चात 200 से अधिक नए संकाय सदस्यों ने संस्थान में प्रवेश लिया है, जिससे एम्स के विभिन्न विभागों ने संकाय की कमी को पूरा कर लिया गया है।

भारत में पहली बार एमडी/डीए/एमसीएच में नए पाठ्यक्रमों को अनुमोदन दिया गया और शुरू किया गया है जिसमें प्रशामक उपचार चिकित्सा में एमडी, आद्यात शल्यक्रिया में एमसीएच, गहन देखभाल में डीएम, चिकित्सीय नाभिकीय मेडिसिन में डीएम और कई अन्य उभरती शाखाएं शामिल हैं। चल रहे अनेक पाठ्यक्रमों की क्षमता को 90 प्रतिशत तक बढाया गया है और एम्स की विभिन्न विशेषज्ञताओं में वरिष्ठ रेजीडेंट्स के 250 से अधिक पदों का सृजन किया गया है। इससे चिकित्सीय शिक्षा के उभरते क्षेत्रों में देश को और अन्य नए एम्स को प्रशिक्षित श्रमशक्ति उपलब्ध कराने और क्षमता निर्माण में मदद मिलेगी।

15-1-2 fpfdRlk vuqla/kku

- एम्स भारत का सर्वाधिक मान्यता वाला आयुर्विज्ञान संस्थान है और विभिन्न स्वतंत्र सर्वेक्षणों द्वारा इसे विगत 15 वर्षों में सर्वोत्तम चिकित्सा कॉलेजों में से एक का दर्जा दिया गया है।
- एम्स ने अनुसंधान और प्रशिक्षण को आगे बढाने के लिए विश्व के अग्रणी अंतर्राष्ट्रीय विश्वविद्यालयों के साथ समझौता ज्ञापनों पर हस्ताक्षर किए हैं जिनमें शामिल हैं– यूनिवर्सिटी ऑफ मिशिगन–यूएसए, शॉक ट्रामा सेंटर, बाल्टीमोर–यूएसए, दि रॉयल कॉलेज ऑफ फिजीशियन्स एंड सर्जन्स, ग्लासगों, यू.के, एल्फ्रेड हॉस्पीटल, मोनाश यूनिवर्सिटी–मेलबॉर्न, ओसाका यूनिवर्सिटी–जापान, ओहियो स्टेट यूनिवर्सिटी–यूएसए, उमिया यूनिवर्सिटी–स्वीडन–स्वीडिश एंबेसी के माध्यम से और इरासस यूनिवर्सिटी, नीदरलैंडस।
- यह संस्थान जैव चिकित्सा विज्ञान में अनुसंधान क्षमताओं को मजबूत करने और कैंसर अनुसंधान, आघात परिचर्या के क्षेत्रों में संभावित वैज्ञानिक सहयोग तथा प्रतिरक्षा विज्ञान, अनुवांशिकी विज्ञान एवं मूल कोशिक जीवविज्ञान के रूपांतरण पहलुओं में अनुसंधान के लिए यूनिवर्सिटी और मिशिगन, यूनाइटेड स्टेट्स के साथ सहयोग किया है। जय प्रकाश नारायण एपेक्स ट्रॉमासेंटर, राष्ट्रीय आपदा प्रबंधन प्राधिकरण और स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय के सहयोग से आधारभूत जीवन रक्षक और उन्नत आघात जीवन रक्षक दोनों क्षेत्रों में भारत में क्षमता निर्माण की दिशा में क्षमता निर्माण पर कार्य कर रहा है।
- एम्स ने नेशनल कैंसर इंस्टीट्यूट, यूएसए के साथ क्षमता निर्माण पर ध्यान केन्द्रित करते हुए ज्ञान साझा करने तथा प्रौद्योगिकी स्थानांतरण पर समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए हैं। झज्जर के एम्स परिसर में स्थित राष्ट्रीय कैंसर संस्थान की स्थापना के लिए नेशनल कैंसर इंस्टीट्यूट, यूएसए तकनीकी सहायता उपलब्ध कराएगा।
- एम्स ने 15–16 अक्तूबर, 2015 को आघात परिचर्या एवं उपचर्या पर पूर्वी एशिया गोलमेज सम्मेलन (ईएएस) का सफलतापूर्वक आयोजन किया। 18 देशों से आए 122 प्रतिनिधियों ने सम्मेलन में भाग लिया। ईएएस प्रतिभागी देशों ने एक परिणामी दस्तावेज को स्वीकृति दी और रूपनामा जिसमें आघात परिचर्या एवं उपचर्या के क्षेत्र में समान एवं प्राथमिकता वाले क्षेत्रों को आगे बढाने का संकल्प लिया गया।
- एम्स ने हृदयरोग विज्ञान और कैंसर परिचर्या पर बल

देते हुए प्रथम एम्स फ्रेंच अकादमी ऑफ मेडिसिन (एफएएम) ''जन स्वास्थ्य नव परिवर्तन फोरम'' का भी आयोजन किया। 1300 प्रतिनिधियों/भागीदारों सहित दो द्विवसीय सम्मेलन में 2 देशों में हृदयरोग विज्ञान और कैंसर परिचर्या में उभरते रूझानों पर चर्चा की गई। एम्स और फ्रेस अकादमी ऑफ मेडिसिन के बीच सहयोग ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए गए।

- शैक्षिक वर्ष (2014–15) के दौरान 577 अनुसंधान परियोजनाएं चल रही हैं और संस्थान को 71 करोड रू. का अतिरिक्त मुरल (Mural) अनुदान प्राप्त हुआ। संस्थान के वैज्ञानिकों ने राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय पत्रिकाओं में 2194 शोध पत्र और 308 मोनोग्राफ प्रकाशित कराए। न्यूरोसर्जरी विभाग ने आईआईटी–दिल्ली के सहयोग से न्यूरोर्सर्जरी शिक्षा एवं प्रशिक्षण स्कूल (एनईटीएस) और न्यूरो कौशल प्रशिक्षण सुविधा केन्द्र (एनएसटीएफ) की स्थापना की। अनुसंधान अनुभाग ने नैदानिक अन्वेशक विकास कार्यक्रम, मुख्य अन्वेशक कैसे बने और स्नातकोत्तरों के लिए अनुसंधान कार्य प्रणाली पाठ्यक्रमों को भी शुरू किया है।

- एम्स की कार्यप्रणाली पर स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण पर स्थायी संसदीय समिति की 87वीं रिपोर्ट की सिफारिशों के अनुसरण में, संस्थान में अनुसंधान हेतु आधुनिक प्रयोगशाला सुविधाएं उपलब्ध कराने के लिए केन्द्रीय उपकरण सुविधाकेन्द्र स्थापित करने हेतु संस्थान ने पहल की है।

15-1-3 jksxh ifjp;kZ

- वर्ष 2015–16 में, yxHkx 35-77 yk[k ykx vkihMh esa vk, vkSj 1-47 yk[k vkWijs'ku fd, x, rFkk 3-5 yk[k ykx ,El esa HkrhZ gq,A एम्स ई–हॉस्पीटल प्रोजेक्ट (ऑनलाइन पंजीकरण प्रणाली) को भारत के प्रधानमंत्री द्वारा डिजीटल इंडिया वीक के भाग के रूप में 4 जुलाई, 2015 को शुरू किया गया। स्वास्थ्य मंत्री ने 15 जुलाई, 2015 को ''कायाकल्प–स्वच्छ व हरित एम्स'' अभियान का शुभारंभ किया। स्वास्थ्य मंत्री और बिजली, कोयला और नवीन एवं नवीकरणीय ऊर्जा राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार) द्वारा 25 दिसम्बर, 2015 को एम्स ओपीडी सुधार परियोजना का शुभारंभ किया गया। जनवरी, 2016 तक 12 लाख रोगियों ने परियोजना का लाभ लिया। टाटा कन्सल्टेंसी सर्विसेज द्वारा सीएसआर आधार पर कार्यान्वित एम्स सुधार परियोजना ने रोगी के और अधिक अनुकूल वातावरण तैयार किया है।

रोगी स्वागत कक्ष, एम्स, नई दिल्ली

- रोगी परिचर्या सेवाओं को मजबूत करने के लिए, एम्स ने वित्तीय वर्ष 2015–16 में 261.90 करोड रू. कीमत की मशीन और उपकरण खरीदेगा। खरीदे जा रहे प्रमुख उपकरण हैं– डॉ. आर.पी. नेत्र विज्ञान केन्द्र द्वारा लासिक सर्जरी हेतु एसएमआईएलई (एमॉल इनसीजन लेंटीक्यूल एक्सट्रेक्शन), रेडियोलॉजी विभाग द्वारा रोगी रेडियोलॉकल इमेजारी डेटा और इनेरजरी के भंडारण, जोड–तोड तथा वितरण हेतु एक आरआइएस पीएसीएस प्रणाली (रेडियोलॉजी सूचना प्रणाली) तथा हृदयरोग रेडियोलॉजी विभाग, सीएन केन्द्र द्वारा उन्नत हृदयवाहिका रोग उपयोग में सक्षम एक हाई एंड सीटी स्कैनर। इसके अलावा, संज्ञाहरण विभाग द्वारा संज्ञाहरण वर्कस्टेशनों को संज्ञाहरण मोड्यूलर मॉनीटरों से बदल गया जीवन

भौतिकी विभाग द्वारा रोबोटिक हाई दोपुट नैनोलीटर डिस्पेंसर क्रिस्टेलाइजेशन प्रणाली द्वारा बदल गया तथा एनएमआर विभाग द्वारा 1.5 टेस्ला एमआर स्कैनर को बदला गया। ग्रामीण स्वास्थ्य सेवा परियोजना केन्द्र, बल्लभगढ का प्रमुख सुदृढीकरण शुरू किया गया।

ऑनलाइन प्रणाली हेतु एक रोगी परिचर्या समन्वयक रोगी की मदद करते हुए

- सुपर स्पेशियलिटी विषयों पर रोगियों के बढते भारत और मांग ने सर्वोच्च तृतीयक परिचर्या अस्पतालों में उच्च स्वास्थ्य क्षेत्र निवेश को आवश्यक बना दिया है। वर्तमान में राष्ट्रीय कैंसर संस्थान (710 बिस्तर), एक मातृ एवं शिशु ब्लॉक (400 बिस्तर), एक नए ओपीडी ब्लॉक, एक नए सर्जरी ब्लॉक (200 बिस्तर) और आपातकालीन एवं नैदानिक ब्लॉक (400 बिसतर) तथा राष्ट्रीय जरण केन्द्र (200 बिस्तर) सहित एम्स निरंतर विस्तारण के चरण में है। राष्ट्रीय कैंसर संस्थान 2035 करोड रू. की लागत पर 710 बिस्तरों सहित स्वास्थ्य क्षेत्र में सबसे अधिक सार्वजनिक निवेश का प्रतिनिधित्व करता है। राष्ट्रीय कैंसर केंद्र के लिए भूमि पूजन समरोह 12 दिसम्बर, 2015 को आयोजित किया गया।

- एम्स को एम्स आघात केन्द्र के पीछे 14.95 एकड़ भूमि आबंटित की गयी है जिससे इसकी रोगी परिचर्या क्षमता में बहुत बड़ा विस्तार होगा। इस क्षेत्र में नियोजित किए जा रहे प्रमुख केन्द्रों में 1860 अतिरिक्त बिस्तरों की बढ़ोतरी होगी। आघात केन्द्र विस्तारण में एक बर्न्स एवं प्लास्टिक सर्जरी यूनिट (450 बिस्तर), पाचन संबंधी रोग केन्द्र (450 बिस्तर) बहुमूत्र रोग केन्द्र (240 बिस्तर) अधिक मात्रा प्रत्यारोपण (80 बिस्तर) और गुर्दा तथा हृदय प्रत्यारोपड (63 बिस्तर) शामिल हैं। इन निर्माण कार्यों की कुल लागत लगभग 2700 करोड रू. होगी।

- एम्स संकाय के लिए आवास की मांग कई वर्षों से की जा रही है। वित्त मंत्रालय और शहरी विकास मंत्रालय से परामर्श द्वारा स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय एवं एम्स ने एम्स परियोजना की पश्चिमी परिवार और आयुर्विज्ञान नगर कैम्पस की पुनर्विकास योजना तैयार की है जो एम्स के विभिन्न स्टाफ के लिए लगभग 5000 आवासीय फ्लैट उपलब्ध कराएगी। इस परियोजना को राष्ट्रीय भवन निर्माण निगम के माध्यम से राजस्व तटस्थ मॉडल पर आगामी महीनों में क्रियान्वित करने का प्रस्ताव है।

15-1-4 ctVh; lgk;rk

- वित्त वर्ष 2015–16 के दौरान सरकार द्वारा 1727 करोड रू. (700 करोड रू. योजनागत बजट में और 1027 करोड रू. गैर योजनागत बजट में) की बजटीय सहायता उपलब्ध कराई गई थी। व्यय के प्रमुख शीर्षों में आधारभूत सुविधा मशीनरी और उपकरण, वेतन भुगतान और उपभोज्य शामिल हैं।

- सीएसआर के तहत भूतपूर्व छात्रों, धर्मार्थ संस्थानों और दूत निवेशकों से योगदान की अनुमति हेतु एम्स अक्षय निधि स्थापित की गई।

- भूमि के आंशिक मुद्रीकरण और प्रमुख वित्तीय संस्थागत द्वारा बडे पूंजीगत निर्माण कार्यों के वित्तपोषण के अभिनव तरीके निकाले जा रहे हैं। विश्व बैंक वित्तपोषण के लिए भी प्रस्ताव तैयार किया गया है।

15-2 LukrdkRrj fpfdRlk f'k{kk ,o vu|lèkku lLFkku ¼ih th vkbl,eblvkj½] pMhx<

e|[; fo"k'krk,|

- संगरूर में नया उपग्रह केन्द्र
- ऑनलाइन रोगी पंजीकरण प्रणाली
- व्यापक आपातकाल एवं उन्नत आधात केन्द्र
- कर्करोग विज्ञान, अंतः स्त्राविका, ईएनटी और यकृत रोग हेतु 250 बिस्तर वाला एक नया ब्लॉक

ifjp;

स्नातकोत्तर चिकित्सा शिक्षा एवं अनुसंधान संस्थान, चंडीगढ को ''राष्ट्रीय महत्व'' का संस्थान घोषित किया गया था और 1 अप्रैल, 1967 को संसद के एक अधिनियम (1966 का अधिनियम 51) द्वारा एक स्वायत्त निकाय बना। यह संस्थान पूर्णतः भारत सरकार द्वारा वित्तपोषित है। संस्थान के मुख्य उद्देश्य हैं:–

- सभी विभागों में स्नातक और स्नातकोत्तर चिकित्सा शिक्षा के शिक्षण का स्वरूप तैयार करना ताकि चिकित्सा शिक्षा के उच्च मानक प्रदर्शित किए जा सकें।
- स्वास्थ्य कार्यकलापों की महत्वपूर्ण शाखाओं में कार्मिकों के प्रशिक्षण हेतु जहां तक संभव हो उच्चतर शैक्षिक केन्द्रों को एक स्थान पर एकजुट करना।
- देश की विशेषज्ञों और चिकित्सा शिक्षकों की आवश्यकता को पूरा करने के लिए स्नातकोत्तर चिकित्सा शिक्षा में आत्मनिर्भरता प्राप्त करना।

15-2-1 fpfdRlk f'k{kk

स्नातकोत्तर चिकित्सा शिक्षा एवं अनुसंधान संस्थान, चंडीगढ को पीजीआईएमईआर, चंडीगढ़ अधिनियम, 1966 के अंतर्गत मेडिकल, डेंटल और नर्सिंग डिग्रियॉ, डिप्लोमा और अन्य शैक्षिक सम्मान और उपाधियां प्रदान करने की शक्तियां प्राप्त हैं। वर्ष 2015–16 के दौरान, संस्थान ने 27 पीएचडी डिग्री, 161 एमडी डिग्री, 71 एमएस डिग्री, 44 डीएम डिग्री, 34 एमसीएच डिग्री, 07 एमएससी/एमएससी मेडिकल प्रयोगशाला प्रौद्योगिकी डिग्री, 12 जन स्वास्थ्य में स्नातकोत्तर डिग्री, 04 ओडियोलॉजी एंड स्पीच लेंग्वेज पैथोलॉजी में मास्टर डिग्री 05 अस्पताल प्रशासन में मास्टर डिग्री, 09 एमडीएस डिग्री, 48 बीएससी (चिकित्सा प्रौद्योगिकी) डिग्री, 13 शारीरिक चिकित्सा में स्नातक डिग्री, 07 ओडियोलॉजी एंड स्पीच लेंग्वेज पैथोलॉजी में स्नातक डिग्री, 23 एमएससी नर्सिंग डिग्री, 46 बीएससी (नर्सिंग पोस्ट बेसिक), 78 बीएससी नर्सिंग (4 वर्ष) प्रदान कीं। इसके अलावा, 2015–16 के दौरान विभिन्न स्नातकोत्तर/पोस्ट डॉक्टरल पाठ्यक्रमों में 500 अभ्यर्थियों ने प्रवेश लिया।

श्री नरेंद्र मोदी, माननीय भारत के प्रधानमंत्री पीजीआईएमईआर के XXXIV दीक्षांत समारोह के अवसर पर मुख्य अतिथि थे। मुख्य अतिथि ने नौ गोल्ड मेडलिस्टों को सम्मानित किया। संस्थान के अध्यक्ष एवं माननीय केन्द्रीय स्वास्थ्य मंत्री श्री जे.पी. नड्डा द्वारा इस अवसर पर आठ सौ पच्चीस अभ्यर्थियों को डिग्री प्रदान की गईं। विभिन्न विशेषज्ञताओं के छात्रों को छियालीस सिल्वर मेडल और इक्तालीस ब्रोंज मेडल भी प्रदान किए गए।

15-2-2 fpfdRlk vu|l/kku

संस्थान ने सभी तीनों क्षेत्रों नामशः रोगी परिचर्या, चिकित्सा शिक्षा और अनुसंधान में उत्कृष्ट प्रदर्शन किया है। पिछले कुछ वर्षों में रोगी परिचर्या भार तेजी से बढ़ रहा है और अब बेकाबू होता जा रहा है। वर्ष 1963–64 में 1,25,163 बाह्य रोगियों के वार्षिक प्रवेश और 3328 भर्तियों से, मौजूदा वर्ष में यह आंकडे 2347304 बाह्य रोगी और 86131 भर्तियों तक बढ गए हैं। यह संस्थान देश और विदेश में अनेक मेडिकल कॉलेजों की चिकित्सा शिक्षा की अगुवाई कर रहा है।

यह संस्थान गुणवत्ता अनुसंधान में लगातार ऊंचाइयां छू रहा है और चिकित्सों व मूल चिकित्सकों के 731 शोध पत्र वर्ष के दौरान प्रकाशित हुए। डीएसटी, डब्ल्यूएचओ, डीबीटी, आईसीएमआर और अन्य बाहरी एजेंसियों के

सहयोग से संस्थान के विभिन्न विभागों द्वारा 147 अनुसंधान परियोजनाओं को स्वीकृति दी गई है तथा विगत वर्ष के दौरान 63 परियोजनाएं पूरी की गई। अप्रैल, 2015 से दिसम्बर, 2015 तक की अवधि के दौरान राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय संस्थानों से 26 अतिथि प्राध्यापकों ने पीजीआईएमईआर और इसके संबंधित विभागों का दौरा किया।

भारत में पंद्रह उत्कृष्ट संस्थानों में पीजीआईएमईआर को चिकित्सा शिक्षा, अनुसंधान और बहु–विशेषज्ञता रोगी परिचर्या के लिए दूसरा उत्कृष्ट अस्पताल आंका गया है। दि वीक (29 नवम्बर, 2015) में प्रकाशित दि वीक–नीलसन बेस्ट हॉस्पीटल्स सर्वे, 2015 द्वारा भी पीजीआईएमईआर को दूसरा सर्वश्रेष्ठ अनुसंधान सुविधाओं वाला संस्थान आंका गया है। सर्वश्रेष्ठ अस्पताल विशेषज्ञताओं में पीजीआईएमईआर प्रसूति एवं स्त्री रोग, गैस्ट्रोएंटेरोलॉजी, मधुमेह परिचर्या, फेफड़ा रोग एवं बाल रोग में द्वितीय स्थान पर है और तंत्रिता विज्ञान में तृतीय स्थान पर है। हड्डी रोग और हृदयरोग विशेषज्ञता में चौथे स्थान पर, नेत्र विज्ञान विशेषज्ञता में पांचवे स्थान पर और अर्बुदविज्ञान विशेषज्ञता में छठे स्थान पर है। देश के उत्तरी क्षेत्र में यह दूसरा सर्वश्रेष्ठ अस्पताल भी है। शहर–वार चंडीगढ़ में नौ सर्वश्रेष्ठ मल्टी–स्पेशियलिटी अस्पतालों में पीजीआईएईआर सर्वश्रेष्ठ है।

Mk- r|y lhnk l i|Lrdky;% पीजीआईएमईआर पुस्तकालय संकाय सदस्यों, रेंजीडेंट्स, अनुसंधान अध्येताओं, स्टाफ और छात्रों को सेवाएं प्रदान करने में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। यह रविवार और अवकाश के दिनों सहित प्रतिदिन 20 घंटों के लिए खुला रहता है। पुस्तकालय का रीडिंग रूम 24 घंटे खुला रहता है। वित्त वर्ष 2014–15 के दौरान पत्रिकाओं, ऑनलाइन मेडिकल डेटाबेस और पुस्तकों की सदस्यता पर 2,94,39, 095 रू. खर्च किए गए।

15-2-3 jkxh ifjp;k

- पीजीआईएमईआर में रोगी परिचर्या सेवाओं का विस्तार नेहरू अस्पताल से लेकर अनेक स्वतंत्र केंद्रों जैसे नये ओपीडी ब्लॉक, उन्नत बालरोग केन्द्र, नये आपातकालीन ब्लॉक, उन्नत नेत्र चिकित्सा केन्द्र, नशामुक्ति केन्द्र, उन्नत हृदयरोग चिकित्सा केन्द्र तथा अस्पताल में बिस्तरों की वृद्धि व ऑपरेशन थियेटर सहित उन्नत आघात केन्द्र तक हुआ।
- पीजीआईएमईआर में बिस्तरों की कुल संख्या 1948 बिस्तरों तक बढ़ गई है। बाह्यरोग विभागों में आने वाले रोगियों और उपचार हेतु भर्ती किए गए रोगियों की संख्या निम्नानुसार है:–

jkxh mifLFkfr	2015 (01.01.2015 -31.12.2015)	2014-15	2013-14	2012-13
बाह्य	23,47,304	22,10,670	20,61,911	19,70,708
अंतरंग प्रवेश	86,131	82,164	78,568	72,382

l tjh	2015 (01.01.2015 -31.12.2015)	2014-15	2013-14	2012-13
छोटी	1,59,028	1,49,690	1,44,078	1,23,988
बड़ी	42,478	40,714	38,099	34,286

- **vkikrdkyhu lok,%** आपातकालीन जटिल और उन्नत आघात केन्द्र अन्वेषण एवं ऑपरेशनों सहित सभी चिकित्सीय और शल्य चिकित्सकीय सेवाएं एक ही छत के नीचे प्रदान कराता है। आपातकालीन सेवाओं की देखरेख मेडिकल/सर्जिकल और सुपर स्पेशियलिटी परामर्शदाताओं और सीनियर रेजीडेंटों द्वारा की जाती है। पीजीआईएमईआर की आपातकालीन सेवाओं पर कार्य भार निम्नानुसार है:–

lok	2015 (01.01.2015-31.12.2015)	2014-15	2013-14	2012-13
ओपीडी	87003	73,576	70,756	66,204
प्रवेश	40580	39,026	37,535	36,067
बडी सर्जरी	15080	14,382	13,486	11,409
छोटी सर्जरी	2720	2,645	2,669	1,819

gky dh igy ¼ubl lfo/kk,½

i. 449 करोड रू. की लागत से संगरूर में उपग्रह

केन्द्र। ओपीडी को शुरू किया जाना जाएगा;

ii. ओकोलॉजी, एंडोक्रायोनोलॉजी आईईएनटी (नेहरू केन्द्र का विस्तारण) और हेप्टोलॉजी सहित 250 बिस्तरों सहित एक नए ब्लॉक का अनुमोदन;

iii. आघात केन्द्र की रिमॉडलिंग; और

iv. उन्नत हृदयरोग केन्द्र।

- यह संस्थान पहला ऐसा सरकारी अस्पताल बना जिसे भारत सरकार, ऊर्जा दक्षता ब्यूरो द्वारा स्टार रेटिंग प्रदान की गई है। यह संस्थान उन सात अस्पतालों मे से एक है और ऐसा एकमात्र सरकारी अस्पताल है जिसे उन्नत नेत्र विज्ञान केन्द्र और उन्नत हृदय रोग परिचर्या केन्द्र के लिए यह पुरस्कार मिला है। यह रेटिंग श्री धर्मेन्द्र प्रधान, पेट्रोलियम एवं प्राकृतिक गैस राज्य मंत्री द्वारा 03.09.2014 को प्रदान की गई थी।
- एन्डोक्रनालजी विभाग द्वारा स्थापित 'डायाबेटिक फुट लैब' और 'डायाबेटिक फुट क्लीनिक' शुरू हुआ।
- चिकित्सा सूक्ष्म जैविकी विभाग लगातार, माइक्रोबियल संक्रमण के सभी नैदानिक परीक्षणों हेतु मान्यताप्राप्त सबसे बडा सरकारी क्षेत्र का अस्पताल बना हुआ है। देश के पहले से स्थापित छह रेफरेंस केन्द्रों के अलावा, विभाग को इस वर्ष ''क्षेत्रीय यौन संचरित संक्रमण रेफरेस, अनुसंधान एवं प्रशिक्षण केन्द्र'' के रूप में अपग्रेड किया गया है। विश्व स्वास्थ्य संगठन ने विभाग को बतौर ''वेक्सीन एवं निवारणीय रोग सर्विलोस केन्द्र (वीडीपी)– डिफ्थीरिया एवं काली खांसी'' नामित किया है।
- दि हाई–प्रीसीजन लीनियर एक्सलरेरर ट्रायलॉजी का माननीय केन्द्रीय स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्री ने विधिवत उद्घाटन किया और यह विभाग अब रेडियोलॉजी विभाग में आईजीआरटी और एसबीआरटी जैसी सेवाएं नियमित रूप से उपलब्ध करा रहा है। यूरोपियन सोसाइटी ऑफ मेडिकल ओंकोलॉजी द्वारा विभाग को एकीकृत ओंकोलॉजी और पेलियेटिव परिचर्या केन्द्र हेतु नामित किया है।
- माननीय स्वास्थ्य मंत्री द्वारा मूत्ररोग विभाग में रोबोटिक असिसटेड सर्जरी सुविधा का विधिवत उद्घाटन किया गया जो भारत के उत्तर में इस प्रकार की एकमात्र सुविधा है।
- रोगियों को नई और बेहतर सुविधाएं उपलब्ध कराने के लिए, दैनिक प्रत्यारोपण क्लीनिक के साथ–साथ केवल दिन में देखभाल आवश्यकता वाले रोगियों की देखरेख के प्रयोजन से नेफ्रोलॉजी विभाग ने पांच बिस्तरों सहित एक क्रियाशील डे–केयर यूनिट स्थापित की।
- बाल रोग चिकित्सा विभाग ने उन्नत बाल चिकित्सा केन्द्र में मास स्पेक्ट्रोमेट्री और मेटाबोलिक कोट सुविधा स्थापित की जो क्षेत्र में अपनी तरह की पहली और सरकारी केन्द्र में तीसरी सुविधा है। इससे चयापचयी विकारों और कुछ विशेष आनुवंशिक स्थितियों की पहचान में मदद मिलती है। विभाग ने बाल रोगियों में विटामिन बी12 फोलेट, होमोसिस्टीन, विटामिन डी और थायराइड प्रोफाइल की जांच करने के लिए केमीलुमिनिसेंस प्रणाली भी जोड़ी है।
- नाभिकीय चिकित्सा विभाग ने मेटास्टेंटिक ट्यूमरों के साथ–साथ प्रोस्टेट कैंसर हेतु पेप्टाइड रिसेप्टर रेडियोन्यूक्लाइड चिकित्सा (पीआरआरटी) शुरू की है। यह उपचार इस क्षेत्र में किसी भी अन्य अस्पताल में उपलब्ध नहीं है और उन रोगियों को इससे लाभ मिलने की संभावना है जिन पर परम्परागत कीमो रेडियोथेरेपी प्रभावी नहीं है।
- हेप्टोलॉजी विभाग ने चंडीगढ़ प्रशासन के समन्वय सहित चंडीगढ़ में अक्तूबर, 2015 से ''ड्राइविंग लाइसेंस पर अंगदान'' के लिए विकल्प शुरू किया है। इस प्रकार चंडीगढ़ भारत में ऐसा करने वाला दूसरा राज्य/संघ राज्य क्षेत्र बन गया है। अब ड्राइविंग लाइसेंस के लिए आवेदन पत्र में अंगदान करने के वचन के लिए एक विकल्प है।

- एनाटॉमी विभाग को 27 दान किए गए मृत शरीर प्राप्त हुए और 354 व्यक्तियों ने अपने शरीर को अनुसंधान एवं प्रशिक्षण हेतु दान देने का वचन दिया।

l|puk ik|kfxdh igy%

- पीजीआईएमईआर ने स्वास्थ्य परिचर्या सेवाओं की इलेक्ट्रॉनिक प्रदानगी हेतु डिजीटल संसाधन तैयार करने के लिए अनेक पहल की है। सेवाओं की इलेक्ट्रोनिक प्रदानगी हेतु संस्थान के अस्पताल सूचना प्रणाली (एचआईएस), वेबपोर्टल और संदेश सेवाएं प्रदानगी गेटवे (एमएसडीजी) का उपयोग किया जा रहा है।

- विभिन्न रोगी केन्द्रित सेवाओं जैसे ऑनलाइन रोगी पंजीकरण, प्रयोगशाला रिपोर्टों की ऑनलाइन प्रदानगी को काफी समय से संस्थान के वेब पोर्टल www.pgimer.edu.in और http://pgihis.in पर उपलब्ध करा दिया गया है। ये सेवाएं रोगियों को अद्यतन रक्त स्टॉक स्थिति 15 विभागों जहॉ रोगियों को सीधा देखा जाता है (उन्नत नेत्र केन्द्र (नेत्र रोग) में ऑनलाइन नंबर देना, त्वचा रोग, प्रसूति एवं स्त्री रोग, सामान्य सर्जरी, आंतरिक चिकित्सा, हड्डी रोग, प्लास्टिक सर्जरी, नशामुक्ति एवं प्रशिक्षण केन्द्र, ओटोलेरिंगोलॉजी सिर व गला सर्जरी (ईएनटी) मुख स्वास्थ्य विज्ञान केन्द्र, मूत्ररोग विज्ञान, बाल रोग चिकित्सा, मनोचिकित्सा बाल रोग सर्जरी एवं बाल (हड्डी रोग) उपलब्ध कराती है जिससे उन्हें लम्बी लाइनों में खड़े रहने से राहत मिलती है। मार्च, 2015 से आज तक 25645 रोगियों ने ऑनलाइन पंजीकरण कराया और 11791 संस्थान में आए।

- देशभर में अस्पतालों को जोडने वाले एक राष्ट्रीय मंच फ्रेमवर्क, ''ऑनलाइन पंजीकरण प्रणाली (ORS;http://ors.gov.in) वेब पर ओपीडी मुलाकात, प्रयोगशाला रिपोर्टो और ब्लड बैंक स्टॉक स्थिति को उपलब्ध कराते हुए पीजीआईएमईआर अब भारत सरकार के ''डिजीटल इंडिया'' कार्यक्रम में शामिल हो गया है।

- पीजीआईएमईआर ने दूर साक्ष्य सुविधा शुरू की है जो डिजीटल इंडिया कार्यक्रम के तहत न्यायालय साक्ष्यों में शामिल होने के लिए वीडियों कॉन्फ्रेंस प्रौद्योगिकी का उपयोग करती है। वर्ष के दौरान (30.11.2015 तक) वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के माध्यम से कुल 769 मामलों को सफलतापूर्वक आयोजित किया गया है। इस प्रयोजन के लिए संस्थान के केन्द्रीय पंजीकरण विभाग में तीन विशिष्ट दूर साक्ष्य लाउन्ज स्थापित किए गए हैं। माननीय केन्द्रीय स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्री एवं संस्थान के अध्यक्ष द्वारा हाल में इस सुविधा का उद्घाटन किया गया।

LoPN Hkkjr fe'ku viukuk% पीजीआईएमईआर के सफाई विभाग ने साप्ताहिक सफाई अभियान शुरू किया है जिसके अंतर्गत नियमित साफ–सफाई सेवाओं के साथ–साथ संस्थान के किसी विशेष क्षेत्र को चुना जाता है।

15-3 tokgjyky LukrdksRrj fpfdRlk f'k{kk ,oa vuqla/kku dsUnz ¼tsvkbZih,ebZvkj½] iqMqpsjh

eq[; fo"k'krk,a

- जेआईपीएमईआर अंतर्राष्ट्रीय जन स्वास्थ्य स्कूल की स्थापना
- बहु–विषयक उन्नत अनुसंधान केन्द्र की स्थापना
- स्तन सम्बधी व्यापाक चिकित्सा केन्द्र की स्थापना
- टेलीमेडिसिन कार्यक्रम का विस्तावरण
- वृद्धजन चिकित्सा ब्लॉक की स्थापना
- सुपर–स्पेशियलिटी ब्लॉक का विस्तारण
- स्नातकोत्तर सीटों में 145 से 200 तक की वृद्धि
- संबद्ध स्वास्थ्य विज्ञान संस्थान
- सिविल आधारभूत सुविधा आदि हेतु योजनागत वित्तपोषण 150 करोड रू. से 350 करोड रू. तक बढाया गया।

ifjp;

जेआईपीएमईआर भारत में सर्वश्रेष्ठ पांच चिकित्सा संस्थानों में से एक के रूप में उभरा है और स्वास्थ्य क्षेत्र में वैश्विक दिग्गज बनने की दिशा में अग्रसर है। समुदाय को सभी मुख्य स्पेशियलिटिज और सुपर स्पेशियलिटीज की सर्वोत्तम स्वास्थ्य परिचर्या सुविधाएं निशुल्क उपलब्ध कराने में जेआईपीएमईआर अद्वितीय है। यह गरीब से गरीब से लेकर सबसे सस्ती तक समाज के सभी वर्गों की आवश्यकताएं पूरी करता है। जेआईपीएमईआर देश में चिकित्सा शिक्षा और प्रशिक्षण में प्रथम स्थान पर है और भारतीय आयुर्विज्ञान परिषद द्वारा इसे चिकित्सा शिक्षा में उत्कृष्टता केन्द्र के रूप में मान्यता प्रदान की गई है।

15-3-1 fpfdRlk f'k{kk

- जेआईपीएमईआर समाज के सभी वर्गों को उच्च गुणवत्ता चिकित्सा परिचर्या उपलब्ध कराने के लिए प्रतिबद्ध है; यह सक्षम, संवेदनशील और नैतिक चिकित्सकीय व्यवसायिकों को प्रशिक्षित करने के लिए विभिन्न विषयों में स्नातक, स्नातकोत्तर, सुपर स्पेशियलिटी और पीएचडी पाठ्यक्रम आयोजित करता है।
- जेआईपीएमईआर का 6ठां दीक्षांत समारोह 16.07.2015 को आयोजित किया गया था। माननीय केन्द्रीय स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्री, श्री जगत प्रकाश नड्डा ने इस अवसर पर मुख्य अतिथि के रूप में शोभा बढ़ाई और माननीय पुड्डुचेरी के मुख्यमंत्री थिरू.एन. रंगासामी विशिष्ट अतिथि थे। संस्थान के अध्यक्ष, पद्म भूषण डॉ. एम.के. भान ने कार्यक्रम की अध्यक्षता की। दीक्षांत समारोह के दौरान एमबीबीएस, बीएससी, पीजी (एमडी/एमएस) डीएम/एमसीएच और पीएचडी के उन छात्रों को डिग्रियां प्रदान की गई जिन्होंने वर्ष 2013–14 के दौरान पाठ्यक्रम सफलापूर्वक पूरे किए। विभिन्न विषयों में मेडल भी प्रदान किए गए– पीएचडीः 06, एमसीएचः 08, डीएमः 09, फेलोशिपः04, एमडीः67, एमएसः 36, एमएससीः 33, नर्सिंग में पोस्ट बेसिक डिप्लोमाः 41, एमबीबीएसः 102, बीएससी नर्सिंगः 68 और बीएससी एएमएसः 44

जिपमेर के 6वें दीक्षांत समारोह में छात्र को डिग्री देते हुए माननीय स्वास्थ्य और परिवार कल्याण मंत्री श्री जे पी नड्डा

- जनवरी, 2014 में 30 प्रशिक्षुओं के वार्षिक प्रवेश के साथ जेआईपीएमईआर अंतर्राष्ट्रीय जन स्वास्थ्य स्कूल के संरक्षण के तहत जन स्वास्थ्य में स्नातकोत्तर पाठ्यक्रम को आरंभ किया गया था। एमपीएच कार्यक्रम का फोक्स स्वास्थ्य प्रबंधन में उच्च गुणवत्ता वाले प्रशिक्षित जनशक्ति प्रदान करने के माध्यम से देश की स्वास्थ्य प्रणालियों को सुदृढ़ करना है।
- पीजी शिक्षा की क्षमता को वर्ष में 145 सीट से बढ़ाकर 200 सीट कर दिया गया। वर्ष 2016 से एमबीबीएस क्षमता को 150 एमबीबीएस सीट से 200 एमबीबीएस सीट करने का भी प्रस्ताव है।
- संबहर चिकित्सा योजना संस्थान की स्थापना की गई।
- विगत वर्ष जेआईपीएमईआर अपने पुस्तकालय में 2.5 करोड़ रुपए निवेश किया जिसमें केन्द्रीय पुस्तकालय में 41,650 पुस्तकें और पुस्तक बैंक में 6556 पुस्तकें शामिल करने हेतु पत्रिकाओं और 1409 नई पुस्तकों को शामिल किया गया। हाल ही में जेआईपीएमईआर पुस्तकालय में वाई–फाई कनेक्शन के साथ इससे कंप्यूटर प्रयोगशाला की स्थापना पूरी की गई और 1.25 करोड़ रुपए की लागत से अतिरिक्त पत्रिकाओं को शामिल किया गया। वर्ष 2013–14 के लिए प्रिंट/आनलाइन पत्रिकाओं के लिए 4 करोड़ रुपए और पुस्तकों के लिए 1 करोड़ रुपए का कुल बजट आबंटित था।

15-3-2 fpfdRlk vuqla/kku

वर्तमान में वित्तपोषण के लिए वित्तपोषित और अनुमोदित विशेषज्ञ समीक्षित अनुसंधान अनुदान का कुल मूल्य 20 करोड़ रुपए से अधिक है, जो जेआईपीएमईआर के इतिहास में उल्लेखनीय वृद्धि और अभूतपूर्व है। इस वित्तपोषण में 1.65 यूएस मिलियन डालर का विदेशी वित्तपोषण शामिल है। वित्तपोषण में कई अन्य में आईसीएमआर,डीबीटी, डीएसटी, आईएनएसईआरएम, भारत–अमरीका अनुसंधान कार्यक्रम विश्व मधुमेह संस्थापना शामिल है। 1 करोड़ रुपए से अधिक वित्तपोषण प्राप्त करने वाली परियोजनाओं में: 6 ग्रेड I आईसीएमआर विषाणु विज्ञान नेटवर्क प्रयोगशाला, प्रतिजैविक प्रतिरोध निगरानी केन्द्र की स्थापना, मधुमेह अनुसंधान एवं औषध प्रतिरोधी तपेदिक का बायोमार्कर शामिल है। बाहय वित्तपोषण से वृद्धि करने के लिए इस क्रम को बनाए रखने हेतु, संस्थान का विचार आने वाले वर्ष में अनुसंधान के 2 करोड़ रुपए से अधिक आंतरिक अनुदान को कम से कम दुगना करने और डीन के अंतर्गत अनुदान और अनुबंध से संबंधित कार्यालय की स्थापना करना है। मूलभूत और ट्रांसलेशनल अनुसंधान के लिए केन्द्रीय स्रोत करने क लिए, आने वाले वर्ष के दौरान एक नई बहु–विषयक उन्नत अनुसंधान केन्द्र (एमएआरसी) का निर्माण किया जाएगा।

15-3-3 jksxh ns[kHkky lsok,¡

- औसत बाह्रय रोगी और आपातकालीन उपस्थिति प्रति दिन 6000 रोगियों से अधिक होती है और कुल वार्षिक ओपीडी उपस्थिति 1,08,000 है। संस्थान प्रति वर्ष 70,000 से अधिक रोगियों की भर्ती करता और वार्षिक तौर पर 39 लाख जांच करता है। प्रति वर्ष लगभग 36,000 शल्यक्रियाएं की जाती है जिसमें विगत वर्ष की तुलना में 1200 शल्यक्रियाएं अधिक है।
- कुछ प्रमुख रोगी देखभाल पहल निम्नलिखित हैः–
  - o सुपर स्पेशियलिटी ब्लॉक का विस्तार
  - o वृद्धाजन वस्था ब्लॉक की स्थापना
- जेआईपीएमईआर ने विस्तृत स्तन देखभाल केन्द्र की स्थापना की है। शल्यक्रिया सर्जिकल ओंकोलॉजी, मेडिकल ओंकोलॉजी तथा रेडिएशन ओंकोलॉजी विभाग स्तन कैंसर के उचित उपचार प्रदान करते हैं। इस देखभाल को व्यापक बनाने के लिए, ये विशिटताएं विशेषज्ञों के साथ प्लस्टिक और रिकंस्ट्रकटिव सर्जरी और सहायक स्टाफ जैसे रोगी संचालक, जेनेटिक परामर्शदाता और फिजियोथेरेपिस्ट के रुप में, सभी एक स्थान में कार्य करेंगें।
- विगत वर्ष के दौरान जेआईपीएमईआर टेलीमेडिसिन कार्यक्रम का विकास तीव्र गति से हुआ। जेआईपीएमईआर, राष्ट्रीय ज्ञान नेटवर्क के तहत दक्षिण भारत के चिकित्सा महाविद्यालय नेटवर्क के लिए नोडल स्थल है। स्वास्थ्य और परिवार कल्याण मंत्रालय, भारत सरकार ने स्वास्थ्य और परिवार कल्याण के राष्ट्रीय चिकित्सा महाविद्यालय नेटवर्क (एनएमसीएन) के तहत दक्षिण भारत (आंध्र प्रदेश, कर्नाटक, केरल, तमिलनाडू एवं पुडुचेरी) के चिकित्सा महाविद्यालयों के लिए जेआईपीएमईआर टेलीमेडिसिन केन्द्र, पुडुचेरी को क्षेत्रीय संसाधन केन्द्र (आरआरसी) एवं परामर्शदाता संस्थान निर्दिष्ट किया है। वर्ष 2014 में जेआईपीएमईआर टेलीमेडिसिन ने अपने टेलीमेडिसिन गतिविधियों के लिए बीएमजे पुरस्कार प्राप्त किया। जेआईपीएमईआर की वित्तीय रूप से सहायता करने तथा मौजूदा टेलीमेडिसिन सेवाओं का उन्नयन करने हेतु दिनांक 19 मार्च, 2015 को निदेशक, जेआईपीएमआईआर ने स्वास्थ्य और परिवार कल्याण मंत्रालय, भारत सरकार के साथ समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किया। स्वास्थ्य और परिवार कल्याण मंत्रालय के इस सहायता के साथ जेआईपीएमईआर आनी टेली–शिक्षा और टेली–रोग देखभाल सेवाओं का उन्नयन कर सकेगी।
- tul[;kLokLF; dsfy, igy% जेआईपीएमईआर रोगियों और साधारण जनता के लिए स्वास्थ्य शिक्षा हेतु हमेशा तत्पर रहता है। मेडिको–सोशल सेवा विंग विभिन्न क्षेत्रों में स्वास्थ्य देखभाल कार्यशालाओं आरंभ किया। कैंसर, मधुमेह, हाइपरटेंशन रोगियों और उनके देखभाल प्रदाताओं के लिए कार्यशालाओं का आयोजन किया गया। इस उद्देष्य के लिए चिकित्सकों, मनोविज्ञानिकों, चिकित्सा सामाजिक कार्यकर्ताओं, आहार विशेषज्ञों, फिजियोथेरेपिस्ट

व्यवसायिक चिकित्सकों, योग चिकित्सकों सहित बहु–विषयक स्वास्थ्य देखभाल व्यवसायिकों को नियुक्त किया गया।

- जम्मू एवं कष्मीर में बाढ़ राहत उपायों में विनिर्दिष्ट चिकित्सा दल की सहायता करने के लिए जेआईपीएमईआर ने निवारात्मक एवं सामाजिक चिकित्सा और माइक्रोबायलॉजी विभाग से चिकित्सक समूह को नियुक्त किया।

15.3.4 ctV योजनागत बजट के तहत 350 करोड़ रुपए और गैर–योजनागत बजट के तहत 249 करोड़ रुपए की राशि जारी की गई।

15-3-5 Hkfo"; esa ikFkfedrk okys {ks=

- ➢ कराईकाल में जेआईपीएमईआर–2 की स्थापना
- ➢ नवीन और आगामी पूर्व स्नातक पाठ्यक्रम का विकास
- ➢ जेआईपीएमईआर अंतर्राष्ट्रीय जन स्वास्थ्य स्कूल के लिए अवसंरचना का विकास
- ➢ प्रयोगशाला सेवाओं का एनएबीएच/एनएबीएल प्रत्यायन
- ➢ अंग प्रत्यारोपण कार्यक्रम का विस्तार करना
- ➢ विभिन्न स्पेशियलिटी और सुपर स्पेशियलिटी का उन्नयन
- ➢ साइनेज प्रणाली, पार्किंग सुविधाएं और सुरक्षा सेवाओं का विकास

जेआईपीएमईआर चरण IV विस्तार के तहत निम्नलिखित अवसंरचना और परियोजना कार्यों पर विचार किया जा रहा है:

- ➢ जन उपयोगिता चिकित्सा मार्ट का निर्माण
- ➢ औषध परीक्षण प्रयोगशाला की स्थापना
- ➢ न्यूमेटिक ट्यूब कनवेयर प्रणाली की स्थापना
- ➢ बहु–विषयक एंडोस्कोपी प्रयोगशाला की स्थापना
- ➢ सूचना प्रौद्योगिकी विंग की स्थापना
- ➢ अभिघात केन्द्र और बर्न्स इकाई का उन्नयन
- ➢ स्वास्थ्य व्यवसाय शिक्षा केन्द्र की स्थापना।

15-4 o/kZeku egkohj esfMdy dkWyst ¼oh,e,e lh½ ,oa lQnjtax vLirky] ubZ fnYyh

iLrkouk

सफदरजंग अस्पताल की स्थापना वर्ष 1942 में द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान संबद्ध बलों के लिए एक बेस अस्पताल के रूप में की गई थी। वर्ष 1954 में इसे भारत सरकार, स्वास्थ्य मंत्रालय द्वारा अपने नियंत्रण में लिया गया। वर्ष 1956 में अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान के आरंभ होने तक सफदरजंग अस्पताल, दक्षिणी दिल्ली में तृतीयक परिचर्या प्रदान करने वाला एक मात्र अस्पताल था। यह अस्पताल चिकित्सा परिचर्या में आवश्यकताओं और प्रगति के आधार पर सभी विशेषज्ञताओं में नैदानिक (डायग्नोस्टिक) तथा चिकित्सीय (थेराप्यूटिक) कोणों से अपनी सुविधाओं का उन्नयन नियमित रूप से करता रहा है। इस अस्पताल को वर्ष 1942 में केवल 204 बिस्तरों के साथ आरंभ किया गया था, जिनकी संख्या बढ़कर 1531 बिस्तर हो गई है।

सफदरजंग अस्पताल में वर्धमान महावीर चिकित्सा कॉलेज के नाम से इसके साथ सम्बद्ध एक चिकित्सा कॉलेज है। वर्धमान महावीर मेडिकल कॉलेज की स्थापना नवंबर, 2001 को सफदरजंग अस्पताल में की गई थी और एमबीबीएस छात्रों के पहले बैच ने फरवरी, 2002 को इस कॉलेज में दाखिला लिया। यह कॉलेज गुरू गोविंद सिंह इन्द्रप्रस्थ विश्वविद्यालय, दिल्ली विष्वविद्यालय से संबद्ध है। वर्ष 2008 से स्नातकोत्तर पाठ्यक्रमों को भी गुरू गोविंद सिंह आईपी विष्वविद्यालय से संबद्ध कर दिया गया है।

15-4-1 jksxh ns[kHkky lsok

यह अस्पताल विभिन्न विशिष्टताओं और अतिविशिष्टताओं जिनमें लगभग सभी प्रमुख विषयों को कवर किया गया है, जैसे तंत्रिका विज्ञान, मूत्र विज्ञान, सीटीवीएस, वृक्क विज्ञान, श्वसनीय चिकित्सा, बर्न्स एवं प्लास्टिक्स, बाल रोग शल्य चिकित्सा, जठरांत्र रोग विज्ञान, हृदय रोग विज्ञान, संधि–दर्शन (आथ्रोस्कोपी) और क्रीड़ा (खेल) चोट क्लीनिक, मधुमेह क्लीनिक, थायराइड क्लीनिक में सेवा प्रदान करता है। इसके अतिरिक्त, इस अस्पताल में दो सम्पूर्ण बॉडी सीटी, स्कैनर, एमआरआई, कलर डोपलर, डिजिटल

एक्स–रे हृदय नाल ष्लाका प्रवेशन प्रयोगशाला, मल्टीलोड सीआर सिस्टम व डिजिटल ओपीजी एक्स–रे मशीन हैं। एक होम्योपैथिक ओपीडी और आयुर्वेदिक ओपीडी भी इस अस्पताल के परिसर में चलाई जा रही है।

केन्द्रीय हड्डी रोग संस्थान भारत में अपनी तरह का अग्रणी संस्थान है, जो हड्डी रोग के क्षेत्र में रोगियों को व्यापक देखभाल उपलब्ध कराता है।

संस्थान की विशिष्ट इकाइयां निम्नानुसार हैः–

- स्पाइन स्पेशियलिटी यूनिट
- आर्थ्रोप्लास्टी एवं लोवर लिंब ट्रामा–I
- आथ्रोप्लास्टी एवं अपर लिंब ट्रामा–II
- आर्थ्रोस्कोपी एवं स्पोर्टस इंजरी सहित अपर लिंब ट्रामा
- आर्थ्रोस्कोपी एवं स्पोर्टस इंजरी सहित लोवर लिंब ट्रामा

वर्तमान में सीआईओ अपनी परिसर से लाखों रोगियों के उन्नत एवं व्यापक उपचार प्रदान किया जा रहा है, केन्द्र ने सीआईओ आपातकालीन में 155004 रोगियों की ओपीडी उपस्थिति दर्ज की तथा 42488 रोगियों की शल्यक्रिया की थी। [प्रमुख एवं लघु शल्यक्रिया (01.01.2015 से 31.12. 2015 तक)]

ipufodkl ¼pj.k&I½ dk;l ifØ;k/khu% सुपर स्पेशल्टी ब्लॉक (430+125 बिस्तर सहित), अत्याधुनिक निजी ब्लॉक (206+22 आईसीयू बिस्तरों सहित), आपातकालीन ब्लॉक (500 बिस्तर)। परियोजना आरंभ हो गई है तथा मार्च, 2017 तक पूरा होने की संभावना है।

foxr o"kl esa fodkl@dk;l

vkvkj,l ¼vkuykbu ithdj.k i.kkyh½% प्रधानमंत्री के 'डिजीटल इंडिया वीक' के अनुपालन में, रोगियों की मदद हेतु 15.10.2015 से एक ऑनलाइन ओपीडी पंजीकरण प्रणाली शुरू की गई थी जो www.ors.gov.in पर उपलब्ध है। केवल दो विभागों में ऑनलाइन पंजीकरण द्वारा इस प्रणाली की शुरूआत की गई थी, हालांकि, अब इसमें अस्पताल की कंप्यूटरीकृत पंजीकरण सुविधा पर अधिकतर विभागों को शामिल कर लिया गया है।

वीएमएमसी एवं सफदरजंग अस्पताल, नई दिल्ली में भौतिक चिकित्सा और पुर्नवास विभाग सबसे पुराने पुनर्वास केन्द्रों में एक है जहां लघु एवं दीर्घकालिक देखभाल के लिए व्यापक पुनर्वास सेवाएं उपलब्ध है। लघुकालिक मामले वे होते हैं जिन्हें जोड़ों और मासंपेशियों में दर्द जैसे विभिन्न कोमल ऊतकों से संबंधित स्थितियां, स्पांन्डिलाइटिस, गठिया से संबंधित समस्याएं, शरीर के आसन की समस्याएं आदि होते है जबकि दीर्घकालिक मामले पोलियो, सेरबलपाल्सी, अंगच्छेदन, घात मामलें और स्पाइनल चोट के मामले से प्रभावित बच्चों और व्यस्क होते है। इस वर्ष विभाग में ओपीडी में आने वाले रोगियों की संख्या 122956 थी।

bUMkj lsok,% औसतन अस्पताल के विभिन्न वार्डों से प्रतिदिन 4 रेफरल मामले होते है। इन रेफरल मामलों में चिकित्सा, पैराप्लेगिया, आघात, हेंसन्स रोग, न्यूरोलोजिकल मामले, अंगविच्छेदन मामले, शिशु रोग मामले और शल्य चिकित्सा विशेषज्ञों द्वारा शल्यक्रिया पश्चात के मामले शामिल है। इन मामलों को इस विभाग द्वारा उनके अस्पताल से छुट्टी मिलने तक पुर्नवास सेवाएं प्रदान की जाती है। यह काम का भार स्वीकृत 14 बिस्तरों के अतिरिक्त है अतः देखभाल सेवाएं प्रदान किए जाने वाले वास्तविक बिस्तरों की संख्या 30 से अधिक है। वर्ष 2015–16 के दौरान विभाग द्वारा देखे गए अंतरंग मामलों की संख्या 203 थी।

ilfr ,oa L=h jkx foHkkx

प्रसूति एवं स्त्री रोग विभाग, सफदरजंग अस्पताल का सबसे बड़ा विभाग है जो अस्पताल में आने वाले 30% से अधिक रोगियों का उपचार करता है और सुरक्षित मातृत्व, जनसंख्या स्थरीकरण तथा महिलाओं के जीवन के सभी स्तरों में उनके स्वास्थ्य के लिए विस्तृत चिकित्सा देखभाल प्रदान करता है। विभाग राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र के सभी जिलों से आने वाली महिलाओं तथा पड़ोसी राज्यों के रेफर किए गए रोगियों की स्वास्थ्य संबंधी आवश्यकताओं को पूरा करता है। बड़े और छोटे प्रसूति तथा स्त्री रोग संबंधित शल्य क्रिया की सुविधाओं सहित कुल 293 बिस्तर (प्रसूति संबंधी 227 बिस्तरों को छह वार्डों में वितरित किया गया तथा स्त्री रोग संबंधी 66 बिस्तरों को दो वार्डों में वितरित किया गया) दो प्रसव कक्ष, गहन नवजात देखभाल के लिए दो नर्सरी, आपातकालीन और वैकल्पिक ऑपरेशन थिएटर है।

विभाग ने ओपीडी में 23805 प्रसव करवाए तथा 41488 की देखरेख की। विभाग में की गई शल्यक्रियाओं की संख्याः–

स्त्री रोग संबंधी बड़े शल्यक्रिया	1250
स्त्री रोग संबंधी छोटे शल्यक्रिया	2223
महिला नसबंदी (टयूबेक्टॉमी)	1120
पुरुष नसबंदी (वेसेक्टॉमी)	40
एमटीपी	607
आईयूसीडी	4515

efMflu foHkkx

मेडिसिन विभाग, सफदरजंग अस्पताल एवं वीएमएमसी के सबसे बड़े विभागों में से है। विभाग अंतरंग और बाह्य विभागों में रोगियों को व्यापक स्वास्थ्य देखभाल प्रदान करता है। आपातकालीन सेवाएं 24 घंटे आपातकालीन वार्ड–ए में प्रदान की जाती हैं। विभाग वी. एम. मेडिकल कॉलेज से संबद्ध है और एमबीबीएस तथा एमडी छात्रों को शिक्षण प्रदान करता है। मेडिसिन विभाग वृद्ध रोगियों के लिए विशेष क्लीनिक तथा जी. ई. क्लीनिक का भी संचालन करता है।

- सीनियर रेजीडेंट : 32
- जूनियर रेजीडेंट : 02
- स्नातकोत्तर 2012 : 20
  2013 : 19
  2014 : 20

विभाग की कुछ प्रमुख विशेषताओं में डेंगू/स्वाइन फ्लू मामलों का उपचार है। विभाग में पृथक ईबोला वार्ड है तथा 18 बिस्तरों वाला उच्च निर्भरता इकाई (एचडीयू) है।

15-4-2 fpfdRlk f'k{kk

,echch,l vkj bVuf'ki

- वर्धमान महावीर मेडिकल कॉलेज में वर्तमान में गुरु गोविंद सिंह इंद्रप्रस्थ विश्वविद्यालय से सम्बद्ध एमबीबीएस/स्नातक पाठ्यक्रम के लिए 150 सीट है। इसके अलावा इंटर्नशिप प्रशिक्षण के लिए 200 सीटों की स्वीकृति दी गई है।
- संस्थान स्नातकोत्तर पाठ्यक्रम के लिए 181 सीट और सुपर स्पेशियलिटी पाठ्यक्रमों के लिए प्रति वर्ष 22 सीटों की स्वीकृति प्रदान की है।
- स्नातकोत्तर डिग्री सीटों और सुपर स्पेशियलिटी सीटों का राज्य (विष्वविद्यालय) के 50% कोटा में प्रवेश देने का कार्य गुरु गोविंद सिंह इंदप्रस्थ विश्वविद्यालय (जीजीएसआईपीयू) द्वारा किया जा रहा है और पूरे भारत के 50% कोटे में डीजीएचएस द्वारा प्रवेश देने का कार्य किया जा रहा है।
- संस्थान में डीएनबी ब्राड स्पेशियलिटी के लिए 40 सीट, डीएनबी सुपर स्पेशियलिटी की 12 सीटें और एफएनबी (स्पोटर्स मेडिसिन) की 02 सीटें हैं।

LikVl bt jh lUVj ¼,lvkbl h½ lQnjtx vLirky] ubl fnYyh

- भारत में स्पोट्र्स इंजरी सेन्टर (एसआईसी) अपने प्रकार का एक विशिष्ट केन्द्र है तथा 26 सितंबर, 2010 से स्पोट्र्स इंजरी प्रबंधन और इससे संबंधित जोड़ विकारों के प्रबंधन के लिए एकीकृत सर्जिकल, पुनर्वास और नैदानिक सेवाओं को एक ही छत के नीचे उपलब्ध करा रहा है।
- यह केंद्र दो अलग विशिष्ट और अति उन्नत एकक विभिन्न फील्ड में अलग और अन्य विशिष्ठ सर्जरी प्रदान कर रहा है, यथा–आरंभिक स्पोर्ट इंजरी (आर्थोस्कोपी) और लेट स्वीकल ऑफ स्पोर्ट इंजरी (आर्थराइटिस तथा जोड़ प्रतिस्थापन सर्जरी)।
- रोगी परिचर्या देखभल सेवाओं के संबंध में ब्यौरा निम्नानुसार हैः–

1.	आपातकालीन उपस्थिति सहित ओपीडी उपस्थिति	57671
2.	अंतरंग रोगी उपस्थिति	1725
3.	की गई सर्जरी की संख्या	1724
4.	लघु सर्जिकल प्रोसीजर	4205
5.	भौतिक चिकित्सा	41034
6.	मनोरोग क्लीनिक	630

15-5 yMh gkfMZx fpfdRlk egkfo|ky; ,o Jherh lqprk d`iykuh vLirky] ubZ fnYyh

iLrkouk

लेडी हार्डिंग चिकित्सा महाविद्यालय, नई दिल्ली की स्थापना वर्ष 1916 में केवल 14–16 छात्रों की मामूली संख्या के साथ हुई थी। बाद के वर्षों में यह संस्थान, एमबीबीएस महिला छात्रों के लिए आयुर्विज्ञान शिक्षा हेतु एक पथ प्रदर्शक के रुप में परिपक्व हुआ।

o"kZ 2015&16 ¼vkt dh rkjh[k rd½ dh vof/k d fy, vLirky d vkdM fuEukulkj g%&

स्नातकपूर्व सीटें	200
स्नातकोत्तर सीटें	142
बिस्तरों की संख्या	877
ओपीडी उपस्थिति	670747
अस्पताल में भर्ती रोगी	35602
बेड आक्यूपेंसी	75.9%
की गई शल्यक्रियाएं	
प्रमुख	7498
लघु	8267
कुल	15765
कराए गए प्रसव	13192
नवजात	13471

'द वीक' पत्रिका के अनुसार लेडी हार्डिंग मेडिकल कॉलेज के स्त्रीरोग विभाग का स्थान भारत के उत्तम अस्पतालों में 5वां है।

इसमें प्रसूतिरोग विज्ञान के लिए u'kuy fLdYl yc भी शुरू किया गया है।

15-6 Mk- jke eukgj ykfg;k ¼vkj ,e ,y½ vLirky] ubZ fnYyh

मूल रुप से विलिंग्डन अस्पताल तथा नर्सिंग होम के नाम प्रसिद्ध से इस अस्पताल का नाम बदलकर डॉ राम मनोहर लोहिया अस्पताल रखा गया। सन् 1954 से 54 बिस्तरों के साथ प्रारंभ इस अस्पताल का इसकी सेवाओं की बढ़ती मांग को पूरा करने के लिए समय–समय पर विस्तार करके इसे 1500 बिस्तर वाला अस्पताल बना दिया गया है। यह अस्पताल आम रोगियों के अलावा, केन्द्रीय सरकार स्वास्थ्य योजना लाभार्थियों और माननीय सांसदों, मंत्रियों, न्यायाधीशों और अन्य अति विशिष्ट व्यक्तियों की आवश्यकताओं को पूरा करता है।

अस्पताल में नवंबर, 2015 तक लगभग 15.83 लाख बहिरंग रोगियों का इलाज किया गया और अंतरंग रोगी के तौर पर 67379 रोगी दाखिल किए गए। इसी अवधि में प्रतिवर्ष लगभग 2.90 लाख रोगी आपातकालीन और कैजुअल्टी विभाग में आए। उक्त अवधि में मेडिसिन, सर्जरी, पैड्रियाटिक एवं स्त्री रोग एवं प्रसूति विभाग में अस्पताल में भर्ती होने वाले रोगियों का प्रतिशत क्रमशः 74.2%, 67.6%, 72.4%, और 73.5% था।

इसके अतिरिक्त उक्त अवधि के दौरान रेडियोलाजी एवं प्रयोगशाला परीक्षण की कुल संख्या क्रमशः 2,13,690 और 98,45,026 थी।

vkikrdkyhu o vfHk?kkr ifjp;kZ lsok,a

अस्पताल में हृदय तथा गैर–हृदय संबंधी गंभीर रोगियों कि लिए सुव्यवस्थित कोरोनरी परिचर्या यूनिट (सीसीयू) तथा गहन परिचर्या यूनिट (आईसीयू) मौजूद है। अस्पताल में गहन अभिघात परिचर्या सुविधा वाले 74 बिस्तर अभिघात परिचर्या केंद्र में उपलब्ध है।

vLirky dh gky dh miyfC/k;ka

अस्पताल में रोगी परिचर्या सुविधाओं में निम्नलिखित नवीनतम संवर्धन किए गए हैं:

- oDd ¼juy½ iR;kjki.k वृक्क प्रत्यारोपण जीवित सगे–संबंधी दाताओं के आधार पर शुरू किया गया है तथा अब तक 29 वृक्क प्रत्यारोपण किए जा चुके हैं।
- हास्पिटल के नर्सिंग स्कूल को प्रतिवर्ष 25 छात्रों की क्षमता के साथ वर्ष 1963 के आरंभ किया गया था तथा प्रतिवर्ष 50 छात्रों की क्षमता वाले इस नर्सिंग स्कूल को कॉलेज का रूप दिया गया है।
- नवीनतम आपात चिकित्सा परिचर्या प्रदान करने के लिए एक आपात परिचर्या भवन बनाया गया है,

जिसमें 284 बिस्तर होंगे, जिसमें 57 आईसीयू बिस्तर और 3 ऑपरेशन थियेटर शामिल है, जो पूर्णतः प्रक्रियाशील हो गई है।

- अस्पताल ने भारतीय वाक् एवं श्रवण संस्थान, मैसूर के सहयोग से डीएचएलएस (वाक् एवं श्रवण शिक्षण में डिप्लोमा) ई–डिप्लोमा पाठ्यक्रम आरंभ किया गया है। इसमें प्रत्येक वर्ष 20 छात्रों को प्रशिक्षित किया जाता है। अब तक अस्पताल ने तीन पाठ्यक्रम चलाए हैं।
- अस्पताल ने दूरस्थ शिक्षा के आधार पर इग्नू के सहयोग से अस्पताल प्रशासन में स्नातकोत्तर डिप्लोमा (पीजीडीएचए) भी शुरू किया है। यह एक वर्षीय पाठ्यक्रम है जिसमें 30 छात्रों को प्रवेश दिया जाता है। वर्ष 2016 का पाठ्यक्रम लगातार नवां पाठ्यक्रम है।
- डॉ. राममनोहर लोहिया अस्पताल को एल एंड डीओ द्वारा अस्पताल के समीप जी–पाइंट में 2.2 एकड़ अतिरिक्त भूमि आबंटित की गई है, 724 करोड़ रुपए की लागत से इस स्थान पर सुपर स्पेशियलिटी भवन बनाने के लिए एक योजना बनाई गई है।
- इस सुविधा केन्द्र के लिए संभावित वित्तीय परिव्यय निम्नानुसार हैः–

> परियोजना के निर्माण के लिए 506 करोड़ रुपए।

> उपकरण के लिए 218.88 करोड़ रुपए।

- मातृ परिचर्या केंद्र एवं महिला चिकित्सक छात्रावास का निर्माण प्रस्तावित है।

LukrdkRrj fpfdRlk vuql/kku lLFkku% शैक्षणिक वर्ष 2008–09 से स्नातकोत्तर चिकित्सा अनुसंधान संस्थान संचालित है। वर्तमान में इस संस्थान में स्नातकोत्तर उपाधि /डिप्लोमा पाठ्यक्रम में 101 सीटें और सुपर स्पेशियलिटी कोर्स में 32 सीटें हैं।

ctV% वर्ष के दौरान योजनागत बजट के तहत 175 करोड़ रुपए और गैर योजनागत बजट के तहत 280.00 करोड़ रुपए की राशि उपलब्ध करायी गई थी।

15-7 dykorh lju cky vLirky] ubZ fnYyh

कलावती सरन बाल अस्पताल (केएससीएच) राष्ट्रीय महत्व का एक प्रमुख रेफरल बाल अस्पताल है। अस्पताल ने 18 वर्ष की आयु तक के बाल रोगियों को विशेष रूप से चिकित्सा उपचार सेवा प्रदान करने के लिए वर्ष 1965 में कार्य करना आरंभ किया तथा इसमें अब 375 बिस्तर हैं। केएससीएच (जेआईसीए) को उन्नत करने हेतु योजना के अंतर्गत इस अस्पताल की बिस्तर संख्या को 500 तक बढ़ाया जा रहा है।

कलावती सरन बाल अस्पताल देश में व्यस्ततम बाल अस्पतालों में से एक है, जिसमें दिल्ली एवं पड़ोसी राज्यों से रोजाना 800–1000 बच्चों को ओपीडी में देखा जाता है और रोजाना 80–100 नए दाखिले किए जाते हैं। अस्पताल पोलियामिलेटिस, टेटनस और खसरा हेतु प्रहरी केंद्र है। इसमें अलग बाल आपातकालीन है जहां रोगी सीधे ही पहुंच सकते हैं। अस्पातल एआरआई, यूआईपी और अन्य राष्ट्रीय स्वास्थ्य कार्यक्रमों के लिए एक प्रशिक्षण केन्द्र भी है।

अस्पताल के नवजात खण्ड, जिसमें 80 बिस्तर हैं और प्रतिवर्ष 15000 प्रसव प्रबंधन किया जाता है जो देश में सबसे बड़ा नवजात एकक है और समय पूर्व प्रसव वाले एवं बीमार नवजात बच्चों को वेन्टीलेटर उपचार सहित अद्यतन सेवाएं प्रदान कर रहा है।

अस्पताल द्वारा स्वास्थ्य और परिवार कल्याण मंत्रालय के अनुमोदन से तथा यूनीसेफ की सहायता से ßjk"Vh; ik"kf.kd iquokl llk/ku ,o if'k{k.k dnzÞ की स्थापना की गई है। केंद्र में गंभीर तीव्र कुपोषण (एसएएम) के उपचार हेतु 12 बिस्तर हैं।

o"k 2014&15 d vLirky vkdM fuEu idkj l g&

1.	बिस्तरों की संख्या	:	375		
2.	भर्ती रोगियों की संख्या	:	पुरुष	महिला	कुल
			17896	11930	29826
3.	बेड आक्यूपेंसी दर	:	108.79		
4.	ओपीडी उपस्थिति	:	पुरुष	महिला	कुल
			50878	33919	84797
5.	आपातकालीन	:	पुरुष	महिला	कुल
			33151	22101	55252
6.	सर्जिकल ऑपरेशन की कुल संख्या	:	पुरुष	महिला	कुल
			1339	2348	3687
7.	नवजात एवं नर्सरी देखभाल	:	1097		

15-8 jk"Vªh; ekufld LokLF; vkj rf=dk foKku lLFkku ¼fuEgkl½] cxyw#

राष्ट्रीय मानसिक स्वास्थ्य और तंत्रिका विज्ञान संस्थान का पंजीकरण 1974 में कर्नाटक मानसिक अस्पताल और अखिल भारतीय मानसिक स्वास्थ्य संस्थान के एकीकरण से हुआ था। केन्द्र सरकार और कर्नाटक राज्य सरकार ने संयुक्त रुप से वित्तपोषण किया है। संस्थान को सितम्बर 2012 में "राष्ट्रीय महत्व का संस्थान" घोषित किया गया था। निम्हांस में एक सांस्थानिक निकाय है जिसके अध्यक्ष केन्द्रीय स्वास्थ्य और परिवार कल्याण मंत्री, भारत सरकार तथा चिकित्सा शिक्षा मंत्री, कर्नाटक उपाध्यक्ष है। इस निकाय की सहायता सांस्थानिक निकाय, स्थायी वित्त समिति, शैक्षिक समिति, स्थायी चयन समिति एवं आयोजन तथा मॉनीटरिंग बोर्ड द्वारा की जाती है।

निम्हांस मनश्चिकित्सा, तंत्रिका विज्ञान और तंत्रिका शल्य चिकित्सा क्षेत्रों एवं इसके संबद्ध क्षेत्रों में एक तृतीय परिचर्या अस्पताल और संस्थान के मुख्य ध्यान दिए जाने वाले क्षेत्र शिक्षण, अनुसंधान और समुदाय उन्मुखी कार्यकलाप हैं। इस संस्थान का उद्देश्य मानसिक स्वास्थ्य और तंत्रिका विज्ञान की वृद्धि और विकास को बढ़ावा देना तथा मुख्य उद्देश्य सेवाओं में बहुविषयक दृष्टिकोण लाना है। वर्ष के दौरान संस्थान में 5 लाख रोगियों से अधिक ने चिकित्सा परिचर्या प्राप्त की। संस्थान में कुल 908 बिस्तर हैं जिनमें 100 बिस्तर तंत्रिका विज्ञान और 18 आपातकालीन बिस्तर मनोरोग आपात सेवा के लिए हैं।

15-8-1 jkxh n[kHkky lok,

vkRefuHkj unkfud lfo/kk% संवर्धित संवेदनशीलता और विशेषता सहित विभिन्न नए मान्य परीक्षणों का विकास किया गया है जो क्लीनिकल निदान, में उच्च सूक्ष्मता प्रदान करता है जिससे ठीक–ठाक उपचार और शीघ्र पहचान में सुविधा प्रदान करता है। ऐसी सेवाओं प्रबंधन पर अत्यधिक प्रभाव होता है क्योंकि वे अतिरिक्त जांच, प्रत्यक्ष विशिष्ट थेरेपी तथा अस्पताल में रहने के खर्च को कम करते है। तथापि इनमें से अधिकांश जांच हमारे उन रोगी ग्रहकों, जो मध्यम और निम्न सामाजिक आर्थिक स्थिति के होते है, उन्हें अनुपलब्ध, महंगी अथवा अवहनीय होती है। इस बात को ध्यान में रखते हुए आरंभिक अनुदान के रूप में प्रशासन की सहायता से न्यूरोमस्क्यूलर और न्यूरोइम्यूनोलोजिकल विकारों और न्यूरोबायोलॉजिकल अनुसंधान केन्द्र में न्यूरोमस्क्यूलर तथा न्यूरो–ओंकोलॉजी से सीएनएस रसौली में उन्नत नैदानिक परीक्षण प्रदान करने के लिए एक नई पहल है तथा बड़ी संख्या में रोगियों को लाभ प्रदान करते हुए सफलतापूर्वक कार्य कर रही है।

ldyokMk lkenkf;d ekufld LokLF; dUn% सकलवाडा सामुदायिक मानसिक स्वास्थ्य पिछले तीन दशक से राष्ट्रीय मानसिक स्वास्थ्य कार्यक्रम और अन्य सामुदायिक मानसिक स्वास्थ्य संबंधी गतिविधियों के लिए सार्वजनिक प्रयोगशाला के रुप में कार्य कर रहा है। समीक्षाधीन वर्ष के दौरान लगभग 40 रोगियों और उनके परिवार के सदस्यों, जब वे तीव्र समस्याओं से उपचार प्राप्त कर लेते है और उन्हें अस्पताल में लंबे समय तक रहने की आवश्यकता होती है, के लिए रहने की व्यवस्था हेतु आवासीय सुविधा के रुप में काटेज तथा थेरेपी केन्द्र सहित परिसर और अन्य सुविधाओं का नवीकरण किया गया है।

निम्हांस के अधिदेश में विभिन्न स्वास्थ्य देखभाल प्रदानगी प्रणाली में क्षमता निर्माण की सुविधा प्रदान करना और मानव संसाधन विकास को सुदृढ़ करना है। निम्हांस देश की आवश्यकता को पूरा करने के लिए आवष्यक कौशल को बढ़ावा देने तथा रोजगार योग्य जनशक्ति विकसित करने हेतु चिकित्सा, परा–चिकित्सा और नर्सिंग व्यवसायिकों को उन्नत तकनीकी ज्ञान प्रदान करने के लिए प्रतिबद्ध है। निम्हांस ने शैक्षिक वर्ष 2015–16 से दो सुपर स्पेशियलिटी पाठ्यक्रम न्यूरोपैथोलॉजी में डीएम और व्यसन चिकित्सा में डीएम, आरंभ किया है।

निम्हांस ने विभिन्न अंतर्राष्ट्रीय और राष्ट्रीय वैज्ञानिक सम्मेलनों का आयोजन किया तथा विभिन्न नई परियोजनाओं एवं पहल में अपनी अनुसंधान गतिविधियों को आगे बढ़ाया। महिला उपचार विंग, ड्रग टॉकसीलॉजी प्रयोगशाला तथा

वर्चुअल ज्ञान केन्द्र को शामिल करते हुए व्यसन चिकित्सा परिसर केन्द्र की स्थापना किया गया। संस्थान ने क्लीनिकल टोरिओमिक्स के लिए सार्वजनिक क्षेत्र में अपनी तरह का पहला अत्याधुनिक डिजिटल सबट्रेक्शन एंजियोग्राफिक सुविधा तथा अत्याधुनिक एमआर पीईटी स्कैन केन्द्र, और उन्नत मास स्पेक्ट्रोमीटर सुविधा (आर्बिट्रेप फ्यूजन ट्रिबिड मास स्पेक्ट्रोमीटर) की स्थापना भी की है। ऑपरेशन थियेटर और आइसीयू में ऑटोनॉमिक तंत्रिका तंत्र के लिए हार्ट रेट वेरिएबिलिटी मॉनीटर, सेरिब्रल आक्सीजिनेशन के लिए नियर इंफ्रारेड स्पेक्ट्रोस्कोपी, विजुवलाइजेशन और इनट्यूबेशन के लिए विडियो लैरिंगोस्कोपी, ट्रांसोइसोफेगल इकोकार्डियोग्राम को सर्जिकल सुविधाओं में जोड़ा गया है। क्लीनिकल पैथोलॉजी और हीमोटोलॉजी अनुभाग में नई इलेक्ट्रोफोरेसिस प्रणाली की स्थापना की गई है। संस्थान में स्पीच पैथोलॉजी एवं आडियोलॉजी ने नई पहल प्राथमिक ऑडिटरी न्यूरोपैथी (ऑडिटरी न्यूरोपैथी स्पेक्ट्रम विकार) वाले व्यक्ति के श्रवण पुनर्वास, आरंभ किया गया है जिसमें समाधान प्रत्येक व्यक्ति के अनुसार किया जाता है। आस्टिक स्पेक्ट्रम, विकार, ध्यान में कमी, हाइपरकाइनेटिक विकार और कई अन्य विकारों से पीड़ित बच्चों को प्रशिक्षण प्रदान करने के लिए आक्यूपेशनल थेरेपी अनुभाग, न्यूरोलॉजिकल पुनर्वास विभाग के तहत एक मल्टी–सेंसरी इकाई की स्थापना की गई है।

निम्हांस ने भारत की प्रतिनिधि जनसंख्या में मानसिक, न्यूरोलोजिकल ओर नशे के कारण विकारों का अनुमान लगाने के उद्देश्य से देश में मानसिक स्वास्थ्य संसाधन की स्थिति का पता लगाने के लिए राष्ट्रव्यापी सर्वेक्षण भी किया।

15-8-2 vkmVjhp@tu f'k{kk vkSj foLrkj xfrfofèk;k¡

Tku LokLF; dsUnz ¼lhih,p½ अपने अधिदेश के अनुपालन में सीपीएच ने वर्ष के दौरान सड़क यातायात दुर्घटना, एल्कोहल उपयोग कि अन्यों को हानि, ड्रग और रसद सहित प्रमुख जन स्वास्थ्य क्षेत्रों में अनेक परिचालन अनुसंधान गतिविधियों की ओर समुदाय स्वास्थ्य कार्मिकों के प्रशिक्षण हेतु मैनुअल तैयार किया। मानसिक व्यवहार संबंधी और नशे के कारण विकारों के लिए सेवाएं सुधारने के लिए स्वास्थ्य कार्मिकों हेतु विभिन्न प्रशिक्षण कार्यक्रम चलाए। 31 मार्च, 2015 तक कोलार के विभिन्न स्वास्थ्य केन्द्रों से आए चिकित्सा अधिकारियों को प्रशिक्षित किया गया था और समुदाय स्वास्थ्य कार्यकर्ताओं का प्रशिक्षण आरंभ किया है। जिलों में औद्योगिक स्वास्थ्य प्रणाली और सेवाओं के मूल्यांकन के संबंध में पहल की गई थी।

युवा स्पंदन परियोजना का लक्ष्य कर्नाटक के 10 जिलों में जिला युवा सशक्तिकरण केन्द्रों द्वारा युवा एंकर के लिए स्वास्थ्य संवर्धन सेवाएं प्रदान करना था। 10 जिलों के 14,000 युवाओं तक लगभग 142 जागरूकता कार्यक्रम पहुंचाया गया।

15-8-3 fo'k"kK fDyfud lsok,a

,fMDlu esfMlhu dsUnz

वर्ष 2014–15 के दौरान एडिक्शन मेडिसीन केन्द्र (सीएएम) ने अपनी सेवाओं का विस्तार जारी रखा। रोगी परिचर्या जन जागरूकता, समुदाय गतिविधि, अनुसंधान ओर नीति की बढ़ती हुई मांग के प्रति अनेक नई पहल शुरू की गई थी। महिला उपचार विंग औषध विषाणु विज्ञान प्रयोगशाला और वर्चुअल नॉलेज केन्द्र वाले एडिक्शन मेडिक्शन केन्द्र का उद्घाटन दिनांक 16 अगस्त, 2014 को माननीय स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्री ने किया। महिला उपचार विंग औषध दुर्वसन विकृति से पीड़ित महिलाओं के लिए 20 पलंग वाला एक अनन्य सुविधा केन्द्र है। इस केन्द्र में दवाइयों, परामर्श पारिवारिक कार्यकलापों और रोगी आधारित अन्य सेवाओं के रूप में व्यक्ति विशेष संबंधी परिचर्या पेश की जाएगी। औषध विषाणु विज्ञान प्रयोगशाला रासायनिक जांचे करने के लिए पूर्णतया सुसज्जित है ताकि औषध दुर्वसन से पीड़ित रोगियों और मनश्चिकित्सीय रोगों से पीड़ित रोगियों पर नजर रखी जा सके। इसने 20 विभिन्न जांच और एचपीटीएलसी (हाइपरफोर्मेस थिन लेयर क्रोमेटोग्राफी) जीसीएमएस गैस क्रोमेट ग्राफी–मास

स्पेक्ट्रोस्कोपी, विभिन्न औषध दुर्व्यसनों के अलिसा आधारित विश्लेषण का मानकीकरण किया है।

मल्टी प्वाइंट विडियो कांफ्रेसिंग के उपयोग और भारत और विश्व के विभिन्न केन्द्रों में प्रशिक्षण सत्रों के संचरण के लिए वर्चुअल नॉलेज सेंटर स्थापित किया गया।

केन्द्र विस्तृत अन्तरंग रोगी कार्यक्रम चलाता है जिसमें वैयक्तिक और परिवार मूल्यांकन, अलग–अलग रूझान उपचार जिसमें रोग के पुनरावृत्ति का निष्कासन और दीर्घावधि निवारण हेतु औषधीय उपचार और इसके बाद की परिचर्या, वैयक्तिक और समूह परामर्श, परिवार परामर्श शामिल हैं।

वर्ष 2014–15 के दौरान सीएएम ने 3215 नए रोगियों का पंजीकरण किया और 12257 रोगियों की आमने सामने तथा 8158 रोगियों की टेलीफोन से सहायता की। मौजूदा 57 बिस्तर वाले पूरूष वार्ड में 1 कमरे में 5 और बिस्तर लागए गए है

,fMDlu ij i/kku e=h dh *eu dh ckr* ¼jfM;k dk;Øe½ lh,,e us u'kk[kkjh ds mipkj gsrq fo'k"kKk dk if'kf{kr fd, tkus dh egRrk ij ,d ohfM;k rS;kj fd;k vkj *eu dh ckr* dk;Øe es ekuuh; i/kku e=h ds lcks/ku es ifrfØ;k vkef=r djus dh ?kk"k.kk ds iR;Rrj es ièkku e=h dk;ky; es Hkstk A

'kf{kf.kd dk;Øe%

'वास्तविक ज्ञान नेटवर्क' एक ऑनलाइन क्षमता निर्माण केन्द्र मनश्चिकित्सा विभाग द्वारा देश में कुशल मानसिक स्वास्थ्य संसाधन तैयार करने और सहयोग करने के लिए शुरू किया गया है। शुरूआती दौर मे यह एडिक्शन मेडिसीन/मनश्चिकित्सा के क्षेत्र में विकसित किया था और अब इसका विस्तार विभाग के सेमिनारों और अन्य शैक्षणिक कार्यक्रमों तक किया गया है। यह शैक्षणिक कार्यक्रम देशभर मे प्रसारित है और वेब पोर्टल पर भी उपलब्ध है।

15-8-4 ;kx&ekufld LokLF; ,o rf=dk foKku

उन्नत योग, मानसिक स्वास्थ्य एवं तं्त्रिका विज्ञान केन्द्र (आयुष विभाग, भारत सरकार द्वारा वित्तपोषित) योग में प्रशिक्षण और अनुसंधान संवर्धन हेतु वर्ष 2007 में मोरारजी देसाई राष्ट्रीय योग संस्थान, नई दिल्ली के सहयोग से आरंभ हुआ था। केन्द्र की गतिविधियों में सभी चिकित्सकीय और कई मूल विज्ञान विभागों के कार्य शामिल हैं।

केन्द्र ने मार्च, 2012 में अपनी मूल अवधि पूरी की और जून, 2014 तक सीमित क्षमता में कार्य किया। जुलाई, 2014 में निम्हांस एकीकृत योग केन्द्र (एनआईसीवाई) की स्थापना मानसिक स्वास्थ्य और तंत्रिका विज्ञान में योग से जुड़ी सेवा, प्रशिक्षण और अनुसंधान गतिविधियां जारी रखने के लिए की गई।

निम्हांस चिकित्सकीय सेवा से रेफर किए गए रोगियों और परिचारकों को निम्नलिखित चिकित्सीय सेवाएं वर्तमान में प्रदान की जा रही है:

- निम्हांस एकीकृत योग केन्द्र को रेफर किए गए मनःचिकित्सा और तंत्रिका विज्ञान रोगियों को योग थेरेपी सेवाएं।
- प्रशिक्षित उपचर्या स्टाफ के माध्यम से निम्हांस के मनःचिकित्सा वार्ड के अंतरंग रोगियों के लिए नियमित योग कक्षाएं।
- मनःचिकित्सा और तंत्रिका विज्ञान विकारों से ग्रस्त रोगियों के परिचर्या प्रदाताओं के लिए नियमित योग सत्र।

eu%fpfdRlk okMZ es ;kx l=

यह केन्द्र योग में प्रशिक्षित उपचर्या स्टाफ के माध्यम से विभिन्न मनःचिकित्सा वार्डों में प्रतिदिन योग कक्षाएं भी चला रहा है। चयनित योगाशन, प्राणायाम और नाद अनुसंधान तकनीक के साथ योग आधारित सत्र मनःचिकित्सा के खुले और बंद वार्डों दोनों में व्यायाम के स्थान पर शुरू किए गए हैं। इन योग आधारित सत्रों में औसतन 15–20 रोगियों ने भाग लिया।

वर्ष 2014 (जनवरी से दिसंबर) के दौरान योग केन्द्र पर कुल 9313 रोगी आए तथा 1221 को नए रोगी के रूप में पंजीकृत किया गया। वर्ष 2015 (जनवरी से दिसंबर) में कुल 13382 रोगी आए और 1575 को नए रोगी के रूप में पंजीकृत किया गया।

if'k{k.k xfrfof/k;k

एनआईसीवाई ने दिसंबर, 2014–मार्च, 2015 के दौरान निम्हांस के प्रत्येक स्टाफ और विद्यार्थी के लिए एक माह के तीन योग प्रशिक्षण पाठ्यक्रम आयोजित किए जिसमें 50 से अधिक लोगों ने भाग लिया और योग में प्रशिक्षण प्राप्त किया। इसे भाग लेने वाले स्टाफ और विद्यार्थियों ने काफी सराहा और एनआईसीवाई ने इसे आगामी वर्ष में तिमाही रूप से करने की योजना बनाई है।

केन्द्र ने संपूर्ण योग मॉड्यूल स्कीजो फ्रेनीया रोगियों योग थेरेपिदाताओं द्वारा प्रशिक्षित किए जा चके हैं संपूर्ण योग मॉड्यूल पर वीडियो सीडी तैयार की है जो केन्द्र के साथ साथ घर पर भी वीडियो सत्र में उपयोग की जा रही है। इसी तरह अन्य विकारों के लिए वीडियो टूल तैयार किए जा रहे हैं। एन प्रायोजित टेंलि योग सत्र हाल ही में किया गया था जिसमें केन्द्र में न आ सकने वाले रोगियों के लिए पर्यवेक्षण जारी रखने की क्षमता है।

भारत में मानसिक अस्पतालों के लिए एक प्रायोजित परियोजना के रूप में केन्द्र ने मार्च, 2015 में मानसिक विकारों से ग्रस्त रोगियों को विभिन्न योग मॉड्यल सिखाने के लिए धारवाड़ मानसिक स्वास्थ्य एवं तंत्रिका विज्ञान संस्थान (डीआईएमएचएएनएस) की दो नर्सों के लिए संक्षिप्त प्रशिक्षण पाठ्यक्रम भी आयोजित किया।

15-9 dUnzh; euf'pfdRlk lLFkku ¼lhvkbZih½] jkph

Ikfjp;

केन्द्रीय मनश्चिकिसा संस्थान (सीआईपी), रांची की स्थापना रांची यूरोपियन ल्यूनेटिक एसाईलम के नाम से वर्ष 1918 में हुई थी। वर्ष 1977 में अस्पताल को संस्थान का दर्जा प्रदान किया गया और तत्पश्चात इसका नाम केन्द्रीय मनश्चिकिसा संस्थान रखा गया।

15-9-1 jkxh ifjp;k

इस संस्थान का कैम्पस 210 एकड़ क्षेत्र में फैला हुआ है। इसकी वर्तमान क्षमता 643 बिस्तरों की है। इसमें कुल 15 वार्ड (9 पुरुष वार्ड और 6 महिला वार्ड) हैं, एक आपातकालीन वार्ड तथा एक फेमिली यूनिट है। मरीजों को बंद करके नहीं रखा जाता और वे अस्पताल के भीतर घूम सकते हैं। दवाओं से उपचार, इस उपचार का केवल एक भाग है जो विभिन्न प्रकार की साइकोथेरेपियों, व्यवहार थेरेपी, समूह थेरेपी उपागम भी अपनाया जाता है–रोगी वार्ड के संचालन में भाग लेते हैं और अन्य मरीजों की देखभाल में सहायता करते हैं। मानसिक स्वास्थ्य के साथ–साथ, शारीरिक फिटनेस पर भी बल दिया जाता है–रोगी अपने–आप को शारीरिक रूप से चुस्त–दुरूस्त रखने के लिए नियमित शारीरिक व्यायाम योग, आउटडोर और इनडोर खेलों में नियमित रूप से भाग लेते हैं। मरीजों की देखभाल, अनुसंधान तथा जनशक्ति विकास संस्थान के मुख्य उद्देश्य रहे हैं।

यह संस्थान गंभीर रूप से बीमार मनोरोगियों के लिए सेवाएं प्रदान करता है, जिसमें वे रोगी शामिल हैं जिन्हें समवर्ती चिकित्सकीय विकारों के लिए देखभाल की जरूरत है। 3920 रोगी (3214 पुरूष 706 महिला) भर्ती हुए। कुल 3909 रोगियों (3203 पुरूष और 706 महिला) को अस्पताल से छुट्टी दी गयी। विनिर्दिष्ट अवधि के दौरान औसत बिस्तर अधिभोग 83.3 प्रतिशत रहा।

संस्थान 1975 से एक बाल मार्गदर्शन क्लिनिक और एक 50 बिस्तर वाला बाल मनःचिकित्सा यूनिट चला रहा है। यह सायकोटिक बच्चों, विकास संबंधी विकारग्रस्त बच्चों और मानसिक रूप से पिछड़े बच्चों की आवश्यकताओं की पूर्ति करता है। माता–पिता से अपेक्षा की जाती है कि वे उपचार के दौरान अपने बच्चों के साथ रहें। 7170 बाल रोगी (2011 नए मामले और 5159 अनुवर्ती मामले) आउटपेशेंट डिपार्टमेंट (ओपीडी) में उपचार के लिए आए। रिपोर्टाधीन अवधि के दौरान इस श्रेणी के अंतर्गत कुल 197 मरीज दाखिल किए गए और 196 को अस्पताल से छुट्टी दी गई।

संस्थान में एक आधुनिक ''एस.एस. राजू सेंटर और एडिक्शन सायकियाट्री'' संस्थान है जिसमें शराब तथा नशीले द्रव्यों की समस्या से ग्रस्त व्यक्तियों के उपचार हेतु 60 मरीजों के लिए बिस्तरों की क्षमता है। नशामुक्ति क्लीनिक में ओपीडी में 1029 रोगियों को देखा गया 677 रोगियों को नशा–मुक्ति केंद्र में भर्ती किया गया जबकि 655 को छुट्टी दे दी गई।

बहिरंग रोगी आधार पर देखे गए मुल मामले 70,786 थे (23,045 नए मामले और 47,741 अनुवर्ती मामले) इनमें सभी मनोचिकित्सा मामले (वयस्क और बाल), स्टाफ ओपीडी, विस्तार क्लीनिक, चर्म क्लीनिक एवं मनो–सामाजिक ओपीडी मामले शामिल हैं। कुल 14127 नए मनोचिकित्सा मामले देखे गए (9546 पुरुष एवं 4581 महिला) जबकि इस अवधि के दौरान 45258 मनोचिकित्सा अनुवर्ती मामले (31715 पुरुष एवं 13543 महिला) देखे गए।

संस्थान विस्तार क्लीनिक संचालित करता है जिनमें पश्चिमी बोकारो, हजारीबाग, चंदन क्यारी, बोकारो स्थित सामान्य मनोचिकित्सा क्लीनिक, स्कूल मानसिक स्वास्थ्य कार्यक्रम, दीपशिखा क्लीनिक एवं दीपशिखा रांची स्थित एपिलेप्सी क्लीनिक शामिल हैं। इन विस्तार क्लीनिकों पर शिक्षकों एवं माता–पिता के साथ नियमित शिविर, जागरूकता कार्यक्रम कार्यशालाएं भी आयोजित की जाती हैं। आउटरीच कार्यक्रम के माध्यम से दो स्कूलों में स्कूल मानसिक स्वास्थ्य कार्यक्रम संचालित किए जा रहे हैं। विस्तार क्लीनिकों में 2845 मामले देखे गए।

संस्थान वर्ष 2001 से एक टोल–फ्री टेलीफोन परामर्श सेवा सीआईपी हैल्पलाइन संचालित कर रहा है। संस्थान ई–परामर्श सेवा भी प्रदान करता है। रिपोर्टाधीन अवधि के दौरान 614 सामान्य हैल्पलाइन कॉल, तथा 64 ई–मेल प्राप्त हुई और उन पर कार्रवाई की गई।

15-9-2 fpfdRlk f'k{kk

संस्थान का चिकित्सा मनोविज्ञान विभाग भारत का सबसे पुराना स्वतंत्र चिकित्सा मनोविज्ञान विभाग है। 1962 में चिकित्सा मनोविज्ञान में एक शिक्षण पाठ्यक्रम–चिकित्सा एवं सामाजिक मनोविज्ञान में डिप्लोमा शुरू किया गया था (यह पाठ्यक्रम अब चिकित्सा मनोविज्ञान में एम. फिल के नाम से जाना जाता है)। चिकित्सा मनोविज्ञान में पी. एच.डी. पाठ्यक्रम 1972 में शुरू किया गया था। वर्तमान में एम.फिल. (चिकित्सा मनोविज्ञान) में 12 सीटें तथा पीएच.डी. (चिकित्सा मनोविज्ञान) में 4 सीटें हैं। विभागीय संकाय में 6 सहायक प्रोफेसर, 1 चिकित्सा मनोविज्ञानी, 2 सहायक मनोविज्ञानी और 1 प्रयोगशाला सहायक हैं। बाल मनःचिकित्सा यूनिट बाल व किशोर मानसिक स्वास्थ्य के क्षेत्र में रेजिडेंट डाक्टर और स्नातकोत्तर छात्रों को प्रशिक्षण प्रदान करती है। इसके अलावा एडिक्शन मनःचिकित्सा केन्द्र एलकोहल और ड्रग दुर्व्यसन के क्षेत्र में मानव शक्ति प्रशिक्षण और अनुसंधान हेतु पूर्वी भारत में नोडल केन्द्र की भूमिका निभाता है।

मनःचिकित्सा समाज कार्य विभाग 'मनःचिकित्सा समाज कार्य' में एम.फिल. कार्यक्रम का संचालन करता है। वर्तमान में एम फिल प्रशिक्षुओं के लिए 12 सीटें उपलब्ध हैं।

संस्थान के नर्सिंग शिक्षा अनुभाग पर नर्सों को मनोचिकित्सा नर्सिंग में डिप्लोमा (डीपीएन) प्राप्त करने के लिए प्रशिक्षण प्रदान करने तथा प्रशिक्षु नर्सों को क्लीनिकल नर्सिंग से संबंधित अनुभव प्रदान करने की जिम्मेदारी है। प्रशिक्षण प्राप्त करने वाली प्रशिक्षु नर्सों की संख्या निम्नवत् हैं:–

- मनोचिकित्सा नर्सिंग में एम.एससी – 37
- सामान्य नर्सिंग एवं मिडवाइफरी (जीएनएम)/एएनएम – 625
- बी.एससी. नर्सिंग – 481
- डीपीएन – 04

संस्थान साथ ही भर्ती किए गए ऐसे वयस्कों, बच्चों और किशोरों को ऑक्यूपेशनल थेरेपी (ओटी) प्रदान करता है जो या तो गंभीर मानसिक बीमारी से अथवा गंभीर और चिरस्थायी मानसिक स्वास्थ्य समस्या से ग्रस्त हों। भर्ती किए गए रोगी मध्याह्न भोजन के पूर्व एवं बाद के सत्रों में प्रतिदिन ऑक्यूपेशनल थेरेपी के लिए उपस्थित होते हैं। उन्हें उनकी योग्यताओं एवं अभिरुचियों के अनुसार विभिन्न सैक्शनों में कार्य का आवंटन किया जाता है। लगभग 50 पुरुष रोगी एवं 35 महिला रोगी प्रतिदिन ऑक्युपेशनल थेरेपी के लिए उपस्थित होते हैं। इस विभाग में एक सुसज्जित एवं आधुनिक फिजियोथेरेपी यूनिट भी है। ऑक्यूपेशनल थेरेपी विभाग मनोचिकित्सा रेजीडेंटों, चिकित्सा मनोवैज्ञानिकों मनोचिकित्सा सामाजिक कार्यकर्त्ताओं तथा मनोचिकित्सा नर्सों जैसे मेडिकल एवं गैर–मेडिकल प्रोफेशनलों को ऑक्यूपेशनल थेरेपी एवं पुनर्वास के विभिन्न पहलुओं के संबंध में प्रशिक्षण भी प्रदान करता है।

संज्ञानात्मक तंत्रिका विज्ञान केंद्र की स्थापना आरंभ में 1948 में हुई थी, तब इसे इलैक्ट्रो इनसिफलोग्राफी (ईईजी)

विभाग के नाम से जाना जाता था। ईईजी विभाग में आरंभ में एक 6 चैनल की और फिर एक 8 चैनल की इलैक्ट्रो इनसिफलोग्राफ मशीन थी। अब इसे संज्ञानात्मक तंत्रिका विज्ञान केंद्र कहा जाता है।

वर्तमान में केंद्र में दो अनुभाग हैं– एक चिकित्सा अनुभाग और एक अनुसंधान अनुभाग। चिकित्सा अनुभाग में एक 21 चैनल का पेपर इलैक्ट्रो इनसिफलोग्राफ, एक 32 चैनल का मात्रात्मक इनसिफलोग्राफ और एक 40 चैनल का वीडियो इलैक्ट्रो इनसिफलोग्राम तथा इलैक्ट्रोमायोग्राम (ईएमजी), नर्व कंडक्शन वेलोसिटी (एनसीवी), ब्रेनस्टेमऑसियोटरी इवोक्ड रिस्पोंस (बीएईआर) तथा गैल्वेनिक स्किन रिस्पोंस (जीएसआर) की रिकॉर्डिंग के लिए उपकरण उपलब्ध हैं। अनुसंधान अनुभाग में डेंस अरे ईईजी एक्वीजिशन सिस्टम (64,128 और 192 चैनल), इवोक्ड रिस्पोंस पोटेंशियल (ईआरपी) एक्वीजिशन यूनिट (40 चैनल), एक 40 चैनल का पॉलीसोमनोग्राफी (पीएसजी) यूनिट और एक रिपीटिटिव ट्रांसक्रेनियल मैग्नेटिक स्टिम्युलेशन (आरटीएमएस) यूनिट उपलब्ध है। इलैक्ट्रिकल सोर्स एनालिसिस (बीईएसए) आदि जैसे उन्नत संकेत एनालाइसेस (एएसए) सॉफ्टवेयर प्राप्त किए गए हैं। कुल 6259 जांच की गई।

15-9-3 fpfdRlk vuqla/kku

- अंतर्राष्ट्रीय व राष्ट्रीय पत्रिकाओं में 32 अनुसंधान शोध पत्र प्रकाशित किए गए।
- अंतर्राष्ट्रीय व राष्ट्रीय सम्मेलनों में 57 शोध पत्र प्रस्तुत किए गए।

15-10 iz/kkuea=h LokLF; lqj{kk ;kstuk ¼ih ,e ,l ,l okb½

देश में वांछनीय/विश्वसनीय तृतीयक स्वास्थ्य परिचर्या सेवाओं की उपलब्धता में क्षेत्रीय असंतुलन को ठीक करने और गुणवत्तापरक चिकित्सा शिक्षा हेतु सुविधाओं में भी वृद्धि करने के उद्देश्य से प्रधानमंत्री स्वास्थ्य सुरक्षा योजना (पी एमएस एस वाई) शुरू की गई है। पीएमएसएसवाई के दो घटक–एम्स जैसे संस्थानों की स्थापना और राजकीय चिकित्सा महाविद्यालयों का उन्नयन हैं तथा उसे चरणबद्ध तरीके से किया जा रहा है। उन्नयन कार्यक्रम में विस्तृत रूप से सुपर स्पेशियलिटी ब्लॉकों/अभिघात केन्द्रों के निर्माण द्वारा स्वास्थ्य अवसंरचना में सुधार तथा केन्द्र और राज्य के भाग के आधार पर मौजूदा के साथ साथ सुविधा केन्द्रों में चिकित्सा उपकरणों की प्राप्ति की परिकल्पना की गई है।

पीएमएसएसवाई के प्रथम चरण में 6 एम्स भोपाल, भुवनेश्वर, जोधपुर, पटना, रायपुर और ऋषिकेश प्रत्येक में एक और 13 मौजूदा राज्य सरकारी मेडिकल कॉलेज/संस्थानों (जीएमसीआई) के उन्नयन का कार्य शुरू किया गया है। पीएमएसएसवाई के चरण–2 के तहत रायबरेली में एम्स और 6 जीएमसीआई के उन्नयन कार्य को शुरू किया जा रहा है। पीएमएसएसवाई के चरण–3 के तहत मौजूदा 39 सरकारी मेडिकल कालेज संस्थानों को उन्नयन के लिए लिया जा रहा है। इसके अतिरिक्त, चरण–4 के तहत 3 एम्स की स्थापना के लिए अनुमोदन प्रदान कर दिया गया है। चरण–4 के तहत मौजूदा 12 जीएमसीआई का उन्नयन कार्य विचाराधीन है।

15-10-1 leLr ih ,e ,l ,l okbZ ifj;kstukvksa gsrq vuqekfnr ifj;kstuk ykxr bl izdkj gS&

(करोड़ रूपये में)

	iwathxr ykxr	vkorhZ ykxr	dqy
प्रथम चरण	6210	3097.62	9307.62
द्वितीय चरण	2396	1031.5	3427.50
तृतीय चरण	5071	0	5071.00
चतुर्थ चरण	4949	0	4949.00
dqy	**18626**	**4129.12**	**22755.12**

15-10-2 Ng ,El dh fLFkfr ¼ih,e,l,lokbZ pj.k&I½

'kS{kf.kd l=% छः नए एम्स में प्रत्येक में कुल 350 एमबीबीएस छात्र के चार बैच और कुल 180 बी.एस. नर्सिंग छात्रों के तीन बैच में शिक्षण कार्य चल रहा है। सभी छह नएएम्स में ओपीडी सेवाएं भी शुरू की गई है। सभी छः एम्स में शिक्षण प्रयोजन हेतु आई पी डी सेवाएं शुरू की गई है।

fo/kku% छह एम्स को स्वायत्तता प्रदान करने के लिए अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान अधिनियम, 1956 में संशोधन करते हुए एम्स संशोधन अधिनियम, 2012 को लागू किया गया है। पूर्व में गठित की गई सोसाइटियों को समरूपी संस्थानों के रूप में शामिल किया गया है। प्रत्येक ने एम्स के लिए जुलाई 2013 में एक संस्थागत निकय का गठन किया गया इसके अलावा छह नए एम्स के लिए शासी निकाय, स्थायी वित्त समिति और स्थायी चयन समिति का भी गठन किया गया है।

inksa dk l`tu% प्रत्येक छह एम्स के लिए संकाय तथा नर्सिंग सहित विभिन्न वर्गों के 4089 पदों का सृजन किया गया है। संकाय पदों को भर दिया गया है। संकाय सदस्यों की संख्या एम्स भोपाल में 59, भुवनेश्वर में 69, जोधपुर में 59,पटना में 57, रायपुर में 65 और ऋषिकेश में 50 है। प्रत्येक एम्स द्वारा सीमित गैर–संकायी पदों को भर लिया गया है।

lHkh Ng ,El esa fpfdRlk midj.kksa dh vf/kizkfIr

- छह एम्स के लिए चिकित्सा उपकरणों की अधिप्राप्ति के लिए अधिप्राप्ति सहायक एजेंट (पीएसए) के रूप में एच.एल.एल. लाइफ केयर लिमिटेड को नियुक्त किया गया है।
- एचएलएल लाइफकेयर लि. द्वारा 400 करोड़ रूपए (लगभग) के चिकित्सा उपकरण की प्राप्ति के लिए निविदा को अंतिम रूप दे दिया गया है।
- पृथक रूप से संस्थानों को वर्तमान शैक्षणिक सत्र और इस वर्ष अस्पताल आरंभ करने वाले संस्थानों को अपने न्यूनतम प्रचालन की आवश्यकता की पूर्ति हेतु उपकरण प्राप्त करने के लिए सलाह दी गई है।
- मेडिकल कालेजों के लिए फर्नीचर खरीदा जा चुका है।

15-10-3 u, ,El dh LFkkiuk ih,e,l,lokbZ pj.k&II

केंद्रीय सरकार ने प्रत्येक उत्तर प्रदेश और पश्चिम बंगाल राज्यों में एक–एक एम्स की स्थापना को मंजूरी दी है। उत्तर प्रदेश सरकार ने रायबरेली में एम्स की स्थापना हेतु केंद्र सरकार को भूमि हस्तांतरित की है। मंत्रालय ने परियोजना हेतु परियोजना प्रबंधन परामर्श के रूप में मैसर्स एच.एस.सी.सी. को नियुक्त किया है। एम्स, रायबरेली हेतु आवास परिसर के निर्माण हेतु कार्य शुरू किया गया है और प्रगति पर है। इसके अतिरिक्त संस्थान में स्थानीय जनसंख्या के लाभ के लिए स्वास्थ्य परिचर्या प्रदान करने हेतु अन्य आवश्यक सुविधाओं सहित स्टार्ट अप ओपीडी की भी सुविधा है। स्टार्ट–अप ओपीडी का कार्य प्रगति पर है।

पश्चिम बंगाल में प्रस्तावित एम्स के लिए राज्य सरकार ने कल्याणी में इसकी स्थापना का अनुरोध किया था।

15-10-4 ljdkjh fpfdRlk egkfo|ky; dk mUUk;u ¼pj.k I] II vkSj III½

उन्नयन कार्यक्रम में मोटे तौर पर सुपर स्पेशिलिटी ब्लॉकों/आघात केंद्रों आदि के निर्माण द्वारा स्वास्थ्य अवसरंचना में सुधार करने और मौजूदा के साथ–साथ नए सुविधा केंद्रों हेतु चिकित्सा उपकरणों की खरीद की परिकल्पना की गई है। महाविद्यालय का उन्नयन निम्नानुसार चरणों में किया गया है–

15-10-5 pj.k&I

पीएमएसएसवाई के प्रथम चरण में उन्नयन हेतु लिए गए 13 चिकित्सा महाविद्यालयों में से, आठ चिकित्सा महाविद्यालय; संस्थानों (नामतः त्रिवेंद्रम चिकित्सा महाविद्यालय; सेलम चिकित्सा महाविद्यालय; बंगलूरू चिकित्सा महाविद्यालय, एसजीपीजीआईएमएस लखनऊ; निम्स, हैदराबाद; जम्मू चिकित्सा महाविद्यालय; राजेंद्र आयुर्विज्ञान संस्थान (रिम्स), रांची; और आईएमएस, बीएचयू, वाराणसी में सिविल कार्य पूरा हो गया है।

कोलकाता चिकित्सा महाविद्यालय के संबंध में ओपीडी ब्लॉक, शैक्षणिक ब्लॉक का निर्माण शुरू किया गया है और निर्माण का प्रथम चरण पूरा कर लिया गया है। सुपर स्पेशियलिटी ब्लॉक, जिसका निर्माण द्वितीय चरण में शुरू किया जाना है, को नवम्बर, 2015 में सौंपा गया। श्रीनगर चिकित्सा महाविद्यालय में 99.5 प्रतिशत कार्य पूरा किया गया है। श्रीवेंकटेश्वर आयुर्विज्ञान संस्थान (एसवीआईएमएस) तिरुपति, ग्रांट चिकित्सा महाविद्यालय, मुंबई और बी.जे. चिकित्सा महाविद्यालय, अहमदाबाद जहां उन्नयन में केवल चिकित्सा उपकरणों की खरीद शामिल है, में संभवतः मार्च 2016 तक खरीद प्रक्रिया पूरी हो जाएगी।

15-10-6 pj.k&II

द्वितीय चरण में उन्नयन हेतु 6 चिकित्सा महाविद्यालय में से पांच संस्थानों में सिविल कार्य शामिल हैं और प्रगति/स्थिति इस प्रकार है –

(i) आर पी राजकीय चिकित्सा महाविद्यालय, टांडा–सिविल कार्य पूरा किया गया और दिनांक 1.3.2014 को नया एसएसबी को शुरू किया गया है;

(ii) एएमयू से सम्बद्ध जवाहरलाल नेहरू चिकित्सा महाविद्यालय, अलीगढ़ (99.5 प्रतिशत);

(iii) राजकीय चिकित्सा महाविद्यालय, अमृतसर (99 प्रतिशत);

(iv) पंडित बी.डी. शर्मा स्नातकोत्तर आयुर्विज्ञान संस्थान, रोहतक (68 प्रतिशत); और

(v) मदुरै चिकित्सा महाविद्यालय के नए सुपर स्पेशिलिटी ब्लॉक हेतु स्थान में परिवर्तन के कारण

योजना में संशोधन किया जाना है। सिविल कार्य शुरू किया गया है और 21 प्रतिशत कार्य पूरा हो गया है। राजकीय चिकित्सा महाविद्यालय, नागपुर में उन्नयन कार्यक्रम में केवल उपकरणों की खरीद शामिल है और संस्था/ राज्य सरकार द्वारा पूर्ण खरीद की जा रही है। संस्थान को 77.81 करोड़ रूपये की धनराशि जारी की गई है।

15-10-7 pj.k&III

केन्द्रीय सरकार ने दिनांक 07.11.2013 को पीएमएसएसवाई–उन्नयन के तीसरे चरण के तहत 39 अतिरिक्त चिकित्सा महाविद्यालय के उन्नयन को मंजूरी दी है। कार्यान्वयन चरण–I और चरण–II के आधार पर एचएससीसी/एचएलएल/ सीपीडब्ल्यूडी को 39 चिकित्सा महाविद्यालयों में सिविल कार्यों के लिए परियोजना प्रबंधन और पर्यवेक्षण परामर्शदाता के रूप में चयन किया गया है। अगरतला मेडिकल कालेज, त्रिपुरा और गोवा मेडिकल कालेज, गोवा को छोड़कर सभी मेडिकल कालेजों की विस्तृत परियोजना रिपोर्टों को अनुमोदन दे दिया गया है।

15-10-8 pj.k&IV

वर्ष 2014–15 के बजट भाषण के दौरान माननीय वित्त मंत्री ने 4 नए एम्स, जो आंध्र प्रदेश, महाराष्ट्र, पश्चिम बंगाल पूर्वांचल उत्तर प्रदेश, प्रत्येक में एक एम्स की स्थापना करने की घोषणा की थी।

दिनांक 07.10.2015 को मंत्रिमंडल में प्रधान मंत्री स्वास्थ्य सुरक्षा योजना कार्यक्रम (पीएमएसएसवाई) के तहत 4949 करोड़ रूपये की कुल वित्तीय निहितार्थ सहित, 1618 करोड़ रूपए की लागत से आंध्र प्रदेश में गुंटूर के निकट मंगलागिरि में 1577 करोड़ रूपये की लागत से महाराष्ट्र के नागपुर में और 1754 करोड़ रूपये की लागत से पश्चिम बंगाल के कल्याणी में तीन नए एम्स की स्थापना के लिए अनुमोदन दिया है। कार्यान्वयन की समय सीमा, मंत्रिमंडल द्वारा दिए गए अनुमोदन की तारीख से 5 वर्ष तक की है।

स्वास्थ्य और परिवार कल्याण मंत्रालय और आंध्र प्रदेश/ पश्चिम बंगाल सरकार के बीच समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किया गया है।

o"kZ 2014&15 esa ?kksf"kr th,elhvkbZ dk mUu;u

पीएमएसएसवाई के चरण–IV के तहत उन्नयन कार्य हेतु लिए जाने वाले मौजूदा 12 सरकारी मेडिकल कालेजों/ संस्थान को अभिज्ञात कर लिया गया है। इसके लिए मसौदा ईएफसी नोट को सभी मूल्यांकनकर्ता विभागों अर्थात व्यय विभाग और नीति आयोग को परिचालित किया गया है।

15-10-9 o"kZ 2015&16 esa ?kksf"kr u, , El

वर्ष 2015–16 के बजट भाषण के दौरान माननीय वित्त मंत्री ने छह नए एम्स जो असम, हिमाचल प्रदेश, जम्मू और कश्मीर, पंजाब, तमिलनाडु और बिहार प्रत्येक में एक होगा, की स्थापना की घोषणा की है।

दिनांक 7 नवंबर, 2015 को माननीय प्रधान मंत्री ने जम्मू और कश्मीर के लिए विकास पैकेज को भी अनुमोदित किया तथा घोषणा की गई जिससे जम्मू और कश्मीर के प्रमुख शहरों में स्वास्थ्य देखभाल के लिए एम्स जैसी संस्थानों (2 एम्स, जिसमें वर्ष 2015–16 के बजट भाषण के दौरान घोषणा की गई एक एम्स सहित) की स्थापना शामिल है। पंजाब में नए एम्स के स्थान के लिए भटिंडा को अंतिम रूप दे दिया गया है।

अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान, जोधपुर
ALL INDIA INSTITUTE OF MEDICAL SCIENCES, JODHPUR